प्रकाशक :

श्री तारा कान्त झा
ग्रा०-पो० : मेंहथ
भाया : झंझारपुर, मधुबनी

प्रथम संस्करण : ११०० प्रति

मूल्य : 30/- टाका

मुद्रक :
अरुण प्रिंटिंग प्रेस
9-B, सिकदरपाड़ा स्ट्रीट
कलकत्ता-700 007
फोन : 238-4201

TAKAAK MOL
MAITHILI DRAMA by ANAND KUMAR JHA

दू आखर

ओना तऽ दहेज प्रथा पर मैथिली मे कतेको रचना विद्वान लोकनिक कलम सँ भए चुकल अछि, किन्तु, दहेज रूपी केंसर सँ ई समाज छुटकारा कतह सँ पाओत तऽ दिनो-दिन आरो ग्रसित भेल जा रहल अछि । ईसब किछु देखलाक बाद हमरो हृदय एकर विरोध करै सँ नहि रुकल आ एहि घटना के नव तरहे उजागर करैक संग-संग नव पीढ़ीक युवक आ युवती कें खुलि कऽ आगाँ आवैक सलाह दैक चेष्टा केलौं ।

प्रस्तुत पोथी ''टाकाक मोल'' नाटक मे एक दिश वर पक्षक जोर-जबरदस्ती, घटकैतीक परम्परा, इच्छा-शक्तिक हनन, सजाओल सपनाक टूटैत महल तऽ नाटकक दोसर दिश मे एकर विरोध केनिहार युवक हिचकिचाइत अपन पसन्दक जीवन-संगिनी चुनैक अभियान करैत छथि । नाटक मे एकटा नेना बालक जकरा शिक्षा सन जरूरी बात के छोड़ि महिषक चरवाह बनायल जाइत अछि । बरियातीक दिनो-दिन बढ़ैत अभद्रता, हुनक टूटैत गम्भीरताक सीमा-रेखाक संग-संग बिखरैत सामाजिकता पर पूर्ण रूपे प्रकाश देबक प्रयास कैल गेल अछि । एहि मे कतए तक सफल छी—पोथी अहाँक हाथ मे अछि पढ़ि कऽ निर्णय कए सकैत छी ।

पोथीक प्रकाशन सँ पूर्व अनेक विद्वान लोकनिक एवं मित्रगणक स्नेह, प्रेम आ सहानुभूतिक संग-संग पूर्ण सहयोग भेटल जे अविस्मरणीय रहत । हम आभारी छी स्वर्गीय प्रभाषकुमार चौधरीजीक जिनक क्षणिक भेट मे भेटल वरदानरूपी आशीर्वाद मन आ मस्तिष्क मे अभिनय एवं रचना शक्तिक बीजारोपण कएलक । आइ ओही बीजक अंकुरित रूप ई पोथी थीक । संगहि आभारी छी श्री शंभूनाथ मिश्रजीक एवं श्री गंगा झाजीक जे निरन्तर अपना-अपना समक्ष बैसैक-उठैक सुअवसर प्रदान केलनि ।

परिवार मे बाबूजीक असीम स्नेह आ मायक अनपढ़ताक बादो आगाँ बढ़वै मे अपन सुखक तिलांजलि देलक, जाहि लेल हम दोहरा ऋणी छी । दूनू छोट भाई त्रिलोक एवं अमरेन्द्र जे छोट रहलाक उपरान्तो सब तरहे सहयोग केलक ।

आशा अछि हमर ई पहिल रचना अहाँ सबके पसन्द आओत । पोथी केहन लागल निश्चित रूपे कम सँ कम पत्र द्वारा जरूर सूचित करब ।

—आनन्द कुमार

मंतव्य

वर्त्तमान युग मे टाकाक मोल तऽ निश्चिते रूप सँ बेशी छै मुदा अइ नाटक मे टाकाक महत्व शून्य भऽ जाइ छै जहन 'प्रभाकर' सन आदर्श युवक बिना काटर के 'प्रभा' सन पढ़लि कन्या सँ विवाह करए लेल तैयार भऽ जाइत छथि। बेटीक विवाह मे दान-दहेज देबाक परम्परा शुरूहे सँ आबि रहल छै परन्तु जौं क्षमता सँ बेशी देबाक लेल वरागत कन्यागत कें बाध्य कऽ दइ तऽ आघात पहुँचै छै। ''प्रभा''क पिता खेत बेचिकऽ काटरक व्यवस्था करैत छथि परन्तु सामान्य टाका बाकी रहि गेने वर-पक्ष विवाह मण्डप पर विवाह रोकि दैत छथि। केहन विडम्बना अछि समाज के ! पढ़ल लिखल बेटाक मोल हो परन्तु पढ़लि लिखलि कन्या ढाकी तरक साग।

एहन स्थितिक चित्रण करैत लेखक काटर सन संक्रामक रोगक विरुद्ध आदर्शक स्थापना हेतु युवक आ युवती कें प्रेरित करबाक प्रयास कएलनि अछि अइ नाटकक माध्यम सँ।

वस्तुतः एहि नाटकक मंचन सँ पढ़लि कन्या मे 'प्रभा' सन आत्मविश्वास उत्पन्न हेबाक सम्भावना बनैत छै जे आदर्शहीन वर आ अविवेकी वरक पिता कें मर्मस्पर्शी प्रहार सँ लांछित करैत छथि। तहिना पुरुष प्रधान समाज मे युवकक दायित्व बेशी होइ छै जे समाज मे व्याप्त काटर सन विषवृक्ष कें धैर्य आ उदारताक कुरहरि सँ काटि सकथि तकर उदाहरण अछि अइ नाटकक नायक प्रभाकर।

लेखक विभिन्न स्थिति मे सामाजिक चरित्र कें चित्रण करबा मे सफल छथि संगहि दर्शकक मनोरंजन कें ध्यान मे रखैत हास्यक स्थिति उत्पन्न करबामे सेहो पछुआएल नञि छथि।

अन्ततः लेखकक अल्प आयु होइतहुँ समाजक प्रति एहन चिन्तन एवं समस्या-निदानक-दिशा मे प्रेरणा सँ भरल काटर-विरोधी नाटक ''टाकाक मोल'' लिखबाक साहस प्रशंसा योग्य छनि।

गंगा झा

सदस्य, कोकिल मञ्च

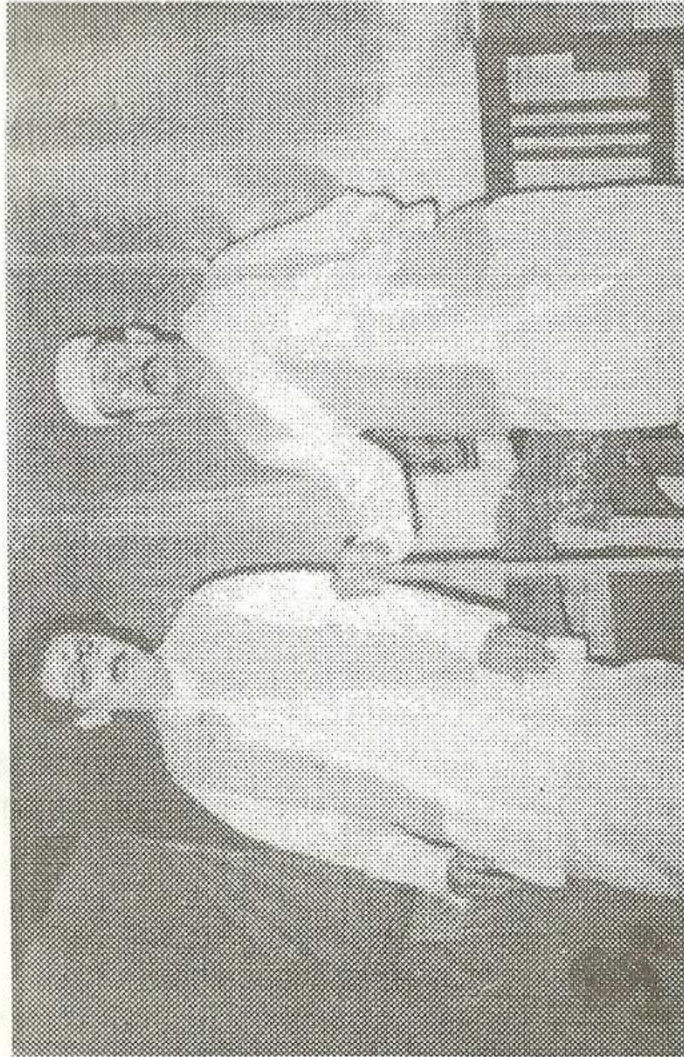
पहिल मंचन

द्वारा : **युवा नाट्य कला परिषद, मेंहथ**
सौजन्य सँ : **पार्थिव शिवपूजन महोत्सव-1997**
स्थान : **हरहर महादेव प्रांगण, मेंहथ**
दिनांक : **11-11-1997**

	पात्र	भूमिका	कलाकार
1.	गरीब झा	(कन्याक पिता)	श्री श्रवण झा
2.	लीलाम्बर बाबू	(वरक पिता)	श्री कालीकान्त झा
3.	गुणानंद बाबू	(गरीब झाक मित्र)	श्री सुरेश झा
4.	दलाल काका	(घटक)	श्री जयचन्द्र झा (लुटकुन)
5.	चेला	(दलाल काकाक मुँहलगुआ)	श्री मुकेश कुमार
6.	प्रभाकर	(प्रभाक प्रेमी)	लेखक स्वयं
7.	समर	(वर)	श्री संतोष कुमार झा
8.	मुख्य सरियाती		श्री वीरेन्द्र कुमार
9.	मुखिया काका		श्री दुर्गानंद झा
10.	प्रभा	(कन्या)	श्री विक्रम कुमार
11.	सुमित्रा	(गरीब झाक पत्नी)	श्री दयानंद झा
12.	पंडीजी	(पुरोहित)	श्री कृतनारायण झा
13.	जीवेश	(गरीब झाक बालक)	मास्टर अमर जी
14.	विद्यार्थी	(प्रभाकर)	मास्टर धीरेन्द्र

अन्य पात्र : लूटन काका, दरोगा, किछु ग्रामीण, बरियाती लोकनि।
कलाकार : श्री रमणजी झा, पंकज कुमार झा, आसुतोष झा, अनिल कुमार संग मे त्रिलोक आ अमरेन्द्र।
पूर्ण सहयोग : श्री सचिन्द्र कुमार झा (फूलबाबू)
सलाहकार : श्री रमानन्द झा, श्री कैलाश कुमार मिश्र
मंच व्यवस्था : श्री हरिश्चन्द्र झा, श्री काशीनाथ झा
प्रकाश व्यवस्था : प्रवीण झा आओर राजू साफी
रूप सज्जा : तपन कुमार झा
संगीत : विनय एवं हुनक सहयोगी
मुख्य अतिथि : **श्री देवचन्द्र झा** (भू० पू० विधायक, झंझारपुर)

लेखक एवं निर्देशक : आनन्द कुमार झा



'टाकाक मोल' नाट्याभिनयक एकटा दृश्य
बाँया सँ : लीलाम्बरक भूमिका मे श्री कालीकान्त झा एवं
दलालक भूमिका मे श्री जयचन्द्र झा ।

अंक : प्रथम

दृश्य : पहिला

[स्थान : गरीब झाक घर । घर सँ सटल दलान । घरक एकटा कोन मे भगवानक फोटो टांगल अछि । प्रभा ओहि फोटोक धूप-आरतीक संग मोन सँ पूजा करैत अछि । पूजाविधि खत्म भेलाक बाद ओ गाबैत अछि—''निर्धन के बेटी बनि जग मे सहब कतेक अपमान यौ ।'' गीतक अन्तिम क्षण मे गरीब झाक प्रवेश । मैल-कुचैल धोती, तेहने कुरता, कान्ह पर गमछा आ हाथ मे छाता । प्रभा कें देखि एक कात मे ठाढ़ भए जाइत छथि एवं बेटीक चिन्तन कें बुझैत छथि । गीत खत्म होइत-होइत प्रभाक आँखि नोर सँ भरि जाइत अछि । गरीब झा सेहो कानए लगैत छथि । प्रभा प्रतिमाक समीप जाइत अछि ।]

प्रभा : हे जगदीश्वर हम ओहि जन्म कोन एहन अपराध कएने छलहुँ जे हमरा बेटी बना कऽ पठेलहुँ । जँ बेटिये कोइख मे जन्म देलहुँ तऽ धनीक घर मे किएक नहि देलहुँ । दिन-राति बाबू, हमर विवाहक चिन्ता मे डूबल रहैत छथि । दिनो दिन हुनकर शरीर खसल जा रहल छन्हि । हे कृपानिधान, हम अहाँ सँ एतवे मांगैत छी जे हमर बाबूक परेशानी के दूर भगा दियौन्ह जाहि सँ ओ प्रसन्न रहथि ।

[तखनहि नेपथ्य सँ सुमित्रा द्वारा प्रभाक पुकार—प्रभा....प्रभा....]

प्रभा : आबि रहल छी माय । *(कहैत प्रस्थान)*

गरीब झा : *(स्वतः आगाँ बढ़ैत)* गरीबक जीवन कुनू जीवन होइत छैक । देखू बाप के बेटीक चिन्ता तऽ बेटी के बापक चिन्ता । *(रुकि)* कतऽ गेलहुँ ? सुनैत छी ऐ जीवेशक माय, अहीं के कहैत छी ।

सुमित्रा : *(नेपथ्य सँ)* एलहुँ, तुरन्त आवैत छी ।

गरीब : हे, एक लोटा जल नेने आयब ।

सुमित्रा : *(एक लोटा जलक संग प्रवेश)* एना उदास किएक छी ? की आइयो कतहु पसन्द भेला की नहि । कोन मतलब अछि अहाँ कें । जकरा एकोरती एहि बातक चिन्ता होइ जे घर मे अजेगर सन कुमारि बेटी अछि तहन ने ।

गरीब : *(धीरज दैत)* अहाँ दिनो-दिन एतेक अधीर किएक भेल जा रहल छी । प्रभा हमर बेटी छी । फेर कन्यादान तऽ बेर-बेर नहि होइत छैक, बड़ किछु सोचक पड़ैत छैक ।

सुमित्रा : तऽ अहाँक विचारे एहू साल बेटीक विवाह नहीं करब । देखू, जेहने होइत अछि, तेहने कुटमैती एही सुध मे कऽ लिअ नहि तऽ एहिगामक लोक हमरा बाजैक मुँह नहि रहऽ देत । चारू दिश लोक एतबे चर्च करैत रहैत अछि जे बेटी बुढ़िया भेल जाइत छन्हि आ विवाहक चिन्ते नहि छन्हि । लोक तऽ एतऽ तक कहैत अछि—बिन वियाहल बेटी कें कॉलेज पठवैत छथि । बड़ पढ़ावैक सौख छन्हि तऽ पहिने वियाह करा देथुन्ह ।

गरीब : बाप रे बाप, एहिगाम मे तऽ अनर्थ बात सब होइत अछि । बेटी हमर छी, ओकर भरण-पोषण हम करैत छी तऽ फेर एहि मे दोसर के किएक आँखि फटैत छैक ?

सुमित्रा : सदिखन एतवे सुनैत रहैत छी—खायक उपाय छन्हिये नहि आ बेटी के कॉलेज पठवैत छथि । एक दिन अवश्ये माथ पर करिखा लगेतैन्ह ।

[ई बात प्रभा एकटा कोन सँ सुनैत रहैत अछि आ सुनि कऽ सिसकय लगैत अछि ।]

गरीब : *(प्रभा कें पकड़ि)* धुर बकलेलही, तू किये कनैत छह । लोकक कहने की हेतैक—लोकक कहने हम तोहर पढ़ाइ थोरबे बन्द करा देबौ । हमरा तोरा पर पूर्ण विश्वास अछि ।

प्रभा : *(कनैत)* बाबू, भगवान हमरा बेटी कोइख मे किएक जन्म देलैथ । आइ हमरा कारने अहाँ कें समाजक लोक मुँह नहि उठबऽ दैत अछि । *(अभिनय करैत)* बाबू हमरा गरदनि दबा कऽ मारि दिअ—मारि दिअ हमरा गरदनि दबा कऽ जाहि सँ एहि समाज कें संतोष हेतै ।

गरीब : ह...ह...ह... बड़ ताल केलऽ, भगवान कुनू गाम थोरे गेलखिन्हैं । सबहक बेटीक विवाह होइत छैक आ हमरा बेटीक विवाह नहि हैत ? तों एकदम नहि कानह । हम तोहर एहन घर मे विवाह करायब जे सब चकित रहि जायत ।

[तखनहि बाहर सँ खखसवाक आवाज]

गरीब : के.......... ?

गुणानंद : हम गुणानंद ।

गरीब : ओ, गुणानंद बाबू, आउ....आउ....भितरे चलि आउ *(सुमित्रा एवं प्रभा सँ)* अहाँ सब आंगन दिश जाउ हमर संगी अवै छथि ।

[एक भाग सँ सुमित्रा एवं प्रभाक प्रस्थान तऽ दोसर भाग सँ गुणानंद बाबूक प्रवेश होइत अछि ।]

गुणानंद : की समाचार अछि यौ, कतौ ठीक-ठौर भेल की ?

गरीब : औ कहाँ-कतौ गोरा-गोटा बैसल । जाहिठाम जाइत छी लाख दू लाख सँ कम के बाते नहि करैत अछि । बड़ मुश्किल मे पड़ल छी । लगैत अछि लोक जेना चारु दिश सँ काटि कऽ खा जायत ।

गुणानंद : सुनू, प्रभा जहिना अहाँक बेटी तहिना हमर । ओकरा बारे मे अगर कियो अंगट-वंगट बात बजैत अछि से हमरा एकदम नहि नीक लगैत अछि । ताहि दुआरे हम अहाँ सँ अनुरोध करैत छी जे जेहने होइत अछि, कुटमैती कए टा लिअ ।

गरीब : चेष्टा मे तऽ पूर्ण तरहे लागल छी । परञ्च अहाँ सँ कोनो बात तऽ नहि छिपौल अछि । पहिल कन्यादान मे हम पूर्ण रूप सँ टुटि गेलहुँ । भगवान हमरा पाँच टा बेटी देने छथि, मात्र बारह कट्ठा खेत रहि गेल अछि । अहीं कहू ने, कतऽ सँ ई लाखक-लाख टाका आनब । हमरा नहि भरोस अछि जे हमर बेटी सबहक विवाह होयत ।

गुणानंद : कुनू विचलित हेवाक नहि छैक । जीवन, मृत्यु आ विवाह ई तीन बात ईश्वरक हाथ मे छन्हि । जकरा भाग्य मे जाहि दिनक जे लिखल रहैत छैक—ओ ओही दिन होइत छैक । ईश्वरक लीला अपरम्पार छन्हि । अहाँ अधीर जुनि होउ । गरीबक बेटीक विवाह भगवाने ठीक करैत छथिन्ह ।

गरीब : गरीब के तऽ यैह एकटा आशा रहैत छैक जाहि पर खेपैत अछि ।

[तखनहि जीवेशक हरबरायल प्रवेश ।]

जीवेश : बाबू ! आबो गप्प सम्पन्न भेल की नहि ?

गरीब : किएक, तोरा कि भेलह ?

जीवेश : हमरा की होयत । होइत तऽ अहाँ के रहैत अछि । कखन सँ थैरे मे महिष बान्हल अछि । ओकरा घूर-धुआँ कऽ दैतियैक से नहि ।

गरीब : ऐं हौ, एखन तक घूर-धुआँ नहि केलह हैं ।

जीवेश : महीष के चरेबो हमहीं करू, घासो हमही काटू, थैरो हमही बनाउ, तकर बाद घूर-धुआँ सेहो हमहीं करू । देखू, आब हमरा सँ पार नहि लागत । हम आब गाम सँ चलि जायब ।

गुणानंद : एहिलेल गाम सँ किएक चलि जायब । ई काज सब बच्चे सबहक छियैक ।

जीवेश : मानलहुँ, ई काज सब बच्चे सबहक छियैक तखन अपना बेटा कैं किएक दरभंगा मे पढ़वैत छी । किएक ने गामे पर घूर-धुआँ करैत रहैक लेल कहैत छियैक । हमरा नहि पढ़ैक सौख होइत अछि कि ?

[गुणानन्द बाबू लज्जित भए कऽ मुँह घुमा लैत छथि ।]

गरीब : *(तमसाइत)* जीवेश....? घर पर आयल लोक संगे एहि तरहें गप करैत छऽ । बड़ बजलह.....जा आ दलाल काका कैं बजौने आबऽ । जँ एखन नहि अबथुन तऽ कहिहनु काल्हि भोरे आबक लेल......।

जीवेश : जाइ छी । कम सँ कम महीष के दुहियो लियौ, दूध काटैत हेतैक । *(कहैत प्रस्थान)*

गरीब : गुणानंद बाबू बच्चाक कहल सुनल कैं क्षमा कऽ देवैक, ज्ञान नहि छैक ।

गुणानंद : एहि मे क्षमा करवाक आ ज्ञान नहि छैक तकर की बात छैक । बच्चा अपन अधिकार मांगि रहल छल । बच्चा तऽ जहिना गरीबक तहिना धनीकक, एकहि समान होइत छैक ।

गरीब : *(विह्वल भए)* की कहू गुणानंद बाबू, बड़ा सपना छल बेटाक आँखि देखवाक, तखनहि तऽ पाँच टा बेटीक बाद

एकटा बेटाक मुँह देखलहुँ । जौं भगवान पहिल बेटा देने रहितैथ तऽ आइ कन्यादानक चक्कर मे तऽ नहि रहितहुँ ।

गुणानंद : की बजैत छी ई बात सब । बेटा-बेटी भेनाइ कुनू अपना हाथक बात थोरवे छियैक । ई तऽ ईश्वरक लीला छियैन्ह । फेर आइ काल्हि मे बेटा-बेटी मे अन्तरे की रहि गेलैक । *(बात बदलि)* हँ जीवेश कैं पढ़वै-लिखवै कियैक नहि छियै ।

गरीब : जाबे ई बेटा नहि भेल छल, ताबे सपना सँ घर कैं सजा कऽ रखने छलहुँ जे बेटा होयत तऽ ओना करब-एना करब, कुनू नीक स्कूल मे नाम लिखा कऽ नीक तरहें पढ़ायब-लिखायब। परञ्च जखने प्रथम कन्यादान केलहुँ जिनगी भरिक कमायल-खटायल जे किछु छल सबटा ओही मे चलि गेल । ओ सामर्थ्य नहि रहल जे बेटा कैं पढ़वितहुँ-लिखवितहुँ । जतेक सपना छल सभटा टूटि छहोछित भए गेल। महिषिक पीठ पर वैसल-वैसल महीसे सनक ओकर बुद्धि भेल जा रहल छैक ।

गुणानंद : ओह, अहूँ बजैत-बजैत भसिआ जाइत छी । एहि बितलाहा बात कैं रटने की लाभ ? जे हेवाक छैक सैह हेतैक । ओहि मे हम अहाँ की कऽ सकैत छी ? वेस तऽ एखन हम चलैत छी । जे जेना हुए से खबरि दए देब । *(जाइक मुद्रा मे घुरि)* जे हुए कुटमैती एही शुध मे कऽ लिअ । *(कहैत प्रस्थान)*

गरीब : *(प्रतिमाक लगीच जा)* हे करुणा के सागर, हे कृपानिधान, एना किएक घुमा रहल छी गामे-गाम । आब दलाने-दलाने बैसैत-बैसैत मोन घोर भए गेल—कतहुं बात नहि बनि सकल। जँ कतौ पसन्द होइत अछि तऽ टाकाक बात

सुनैत देरी दरवज्जा पर सँ अपराधी जकाँ उठए परैत अछि। हे जगतपति, जग उद्धारक आब हमर जनौक लाज अहीं बचाउ ।

[सुमित्राक प्रवेश]

सुमित्रा : की सोच मे पड़ल छी । राति बेसी भए गेलैक, भोजन कऽ लिअ । *(लोटा उठवैत छथि, जाइक मुद्रा)*

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : प्रथम

दृश्य : दोसर

*[स्थान : **गरीब झाक दलान । खाट पर दलाल कका बैसल छथि । बाम भाग सँ चेला भूमि पर वैसल अछि । गरीब झा दाहिना भाग मे ठाढ़ छथि ।**]*

दलाल : आइ हमर कोन काज परलह जे बजेलह ।

गरीब : किएक दलाल कका, एहन बात किएक बजलहुँ । जखने समाज मे लोक रहैत अछि, सबके-सबहक काज पड़ैत छैक। कखन-कहाँ जीवेश के पठेलियैक अहाँ कैं बजवैक लेल । अहीं लेल काल्हिखन गुणानंद बाबू कतेक काल बैसला, हारि कऽ चलि गेलाह ।

दलाल : हँ, समाद तऽ पहुँचल रहए—गाम पर नहि रही । अन्तह गेल रही ।

चेला : अरे एहि मे झूठ बजैक कोन बात छैक गरीब कका । एखन तऽ बुझले अछि शुद्ध चलैत छैक आ हमर सबहक चलती तऽ शुद्धे भरि रहैत अछि ।

दलाल : *(तमसाइत)* चेला.....

चेला : हँ, दलाल काका ! आब जुनि बाजू । सबटा बुझि गेलहुँ ।

दलाल : हँ, तऽ गरीब की बात छिअ फरिछा कऽ कने बाजह ।

गरीब : बात तऽ अहाँ जनिते छियैक सैह कुटमैती बारे मे । कतौ लड़का भजियैल नहिं अछि ?

दलाल : तों तऽ जनिते छहक जे दलाल काका जन्मे सँ एहि समाजक सेवा करैत आबि रहलाहै । कतेको कन्यागत कैं हम उद्धार करेलहुँ ।

गरीब : से तऽ ठीके कहैत छी । एकटा हमरो लड़का ताकि दियह ने । भरि जन्म गुण गावैत रहब ।

चेला : *(आगाँ बढ़ि)* एहि मे गुण गावैक कोन बात छैक । हिनेकर तऽ ई रोजिए-रोटी छियन्हि ।

दलाल : *(चेलाक समीप जा)* चेला........

चेला : बुझि गेलहुँ दलाल काका ! माने हमर कहब अछि जे यैह सेवा तऽ एहि समाजक करैत छथि ।

दलाल : *(चेला सँ)* देख चेला, तोरा एहि सब बात मे दखल देनाइ ठीक बात नहि छियौक । तों चुप-चाप बैसल रह ।

चेला : हम चुप-चाप बैसल छी । अहाँ चिचियाइ किएक लगलहुँ ।

दलाल : हँ, तऽ अहाँ कैं केहन लड़का चाही ।

गरीब : किएक, लड़का अहाँ कैं भजिआएल अछि की ?

दलाल : हमरा लग तऽ दू चारिटा लड़काक भाँज-पता रहिते अछि ।

[तखनहि प्रभाकरक एक कात दकें साइकिल लके प्रवेश एवं प्रस्थान होइत अछि, जकरा मंच परहक कलाकार नहि देखैत अछि ।]

गरीब : दलाल काका, गरीबक अभिलाषा कहियो पूरा नहि होइत छैक। ओकर सपना मात्र कल्पना बनि कऽ रहि जाइत

अछि । अहाँ तऽ जनिते छी हमर बेटी प्रभा आइ० ए० मे पढ़ैत अछि । चारू दिस लोक कुचरि-कुचरि बाजैत अछि—एतेक जे बेटी कैं पढ़वैत छथि, ओहि योग्य वर कएल हेतैन्ह ।

दलाल : तोहर कहब हम बुझि गेलिअ । तोहर कहब छह जे लड़का बी० ए० पास हेबाक चाही ।

गरीब : हँ, लड़का जँ बी० ए० पास होइतै तऽ बढ़ियाँ रहितै । आ अपन भरण-पोषण मे दिक्कत नहि होइ, एहि सँ बेसी नहि ।

चेला : *(अर्थ लगवैत)* आब चुप्प रहैए बला बात नहि रहल । यो गरीब कका, आब अहाँ छोड़बे की केलियैक । लड़का बी०ए० पास, भरण-पोषण मे दिक्कत नहि । अहाँ कने एहिगाम मे गनाउ, कैगो एहितरहक लड़का अछि । औजी सब ढीब-ढाब देने रहैत अछि तैं । सबहक घर मे मुसरी डंड घिचैत छन्हि ।

दलाल : चेला...... ।

चेला : हँ, दलाल काका...... ।

दलाल : तू आब हद सँ बेसी बढ़ल जाइत छैं ।

चेला : *(अभिनय करैत)* औजी बाबू सब, अहीं सब कहू जे हम कुनू गलत बात कहलहुँ । *(तमसाइत)* देखू दलाल काका, अहाँ तहन सँ चेला....चेला....चेला....रट्ट लगौने छी—औजी अहाँ हमर कुनू गुरु कहाँ थिकौंह जे तखन सँ बार-बार चेला चेला केने छी । हम कहैत छी—चेला तऽ हमर नाम ने छी । ककरो नाम लोक एक बेर दू बेर लैत छैक । औजी, जखन सँ हम एलहुँ, किछु बाजू, चेला....चेला धत्तोरी के ।

दलाल : हाँ हाँ, तोरा चेला कहि कऽ बड़ गलती केलहुँ, कृपा कए किछु क्षण अखन मुँह कैं चुप्प राख । हँ, तऽ गरीब, तोहर बात हम पूर्ण रूपें बुझलहुँ । हम तोरा दू सँ चारि दिन मे लड़का भजिआ कऽ कहि देबह । एखन हम सब चलैत छी । *(जाइक उपक्रम—घुरि कऽ)* हाँ एकटा बात कहनाइ बिसरि गेलहुँ ।

गरीब : से की दलाल काका ?

चेला : से इएह की कुटमैती एखुनके शुद्ध मे करबैक कि अगिला शुद्ध मे ।

गरीब : दलाल काका, चारू दीसक लोक हमरा हेय दृष्टि सँ देखैत अछि । एकर मात्र एकेटा कारण जे कुटमैती नहि कऽ रहल छी । ताहि कारने हम कुटमैती एही शुध मे करए चाहैत छी ।

दलाल : एहि लेल उदास होइक कुनू बात नहि छैक । हम कुटमैती निश्चित करा देबह सेहो एही शुध मे । बेस, चलै छी ।

[चेलाक संग दलाल काकाक प्रस्थान । गरीब झा सेहो अरिआतैक लेल जाइत छथि । दोसर भाग सँ जीवेशक प्रवेश होइत अछि ।]

जीवेश : बाबू छी यौ.....

गरीब : की बात हौ, बड़ प्रसन्न लगैत छह ।

जीवेश : कुशुमपट्टी बाला ओझाजीक छोटका भाइ एलाह अछि ।

गरीब : कतए छथि ।

जीवेश : अंगना मे ।

गरीब : अंगना मे ! अंगना कोन दके चलि गेलाह ओ ।

जीवेश : एखने एही दके तऽ गेलइथ हें । अहाँ नहि देखलियैन्हि ?

गरीब : हम गप्प करैत छलहुँ । भऽ सकैत अछि नजरि नहि पड़ल होयत । अच्छा एही ठाम बजौने अबहुन ।

जीवेश : बजौने अबैत छियैन्ह ।

(जीवेशक प्रस्थान, किछु क्षणक बाद प्रभाकरक प्रवेश । गरीब झाक पैर छुबि प्रणाम करैत अछि ।)

गरीब : नीके रहू । माँ, बाबूजी नीके छथि ने ?

प्रभाकर : सब ठीक छथि । भौजी आबैक लेल कहलथि ।

गरीब : गाम परहक झंझट सँ छुट्टी नहि भेटैत अछि । विचारैत छी....फेर किछ ने किछ बाधा । कुनू विशेष बात नहिने ।

प्रभाकर : नहि, भौजियो ठीके छथि । बाबू कैं सुनबा मे एलन्हि जे प्रभाक विवाह ठीक कऽ रहल छियैन्हि । सैह बाबू कहलथि एक बेर खोज कऽ अबहुन ।

गरीब : अपना भरि तऽ पूरा जोर लगौने छियैक । परन्तु भगवानक की लिखलाहा छन्हि से नहि कहि ।

[तखनहि जीवेश नेपथ्य सँ चिकरैत अछि—बाबू कने अंगना अबियौक ।]

हे अहाँ वैसू हम कने आंगन सँ भेने अवैत छी ।

[गरीब झाक प्रस्थान]

प्रभाकर : *(स्वतः)* की कहलन्हि प्रभाक विवाहक लेल पूरा जोर लगौने छी । की प्रभाक विवाह हमरा संग नहि भऽ सकत ? की प्रभा के हम पसिन्न नहि छियैक । हम प्रभा कैं हृदय सँ प्रेम करै छियै आ प्रभा सेहो........

[प्रभाक प्रवेश]

प्रभा : हँ । प्रभाकर, हमहूँ ...... । *(प्रभाकरक हाथ पकड़ि)* हमरा हृदय पर अहींक अधिकार अछि । हमर हाथ अहींटा पकड़ि सकै छी किओ आन नञि ।

[सहटि कऽ लग मे आबि जाइछ] ।

प्रभाकर : प्रभा ! सत्य कहैत छी । अहाँ हमर बात पर विश्वास करी बा नहि करी—जखन-जखन सुनैत छी, प्रभाक विवाह आन ठाम ठीक भऽ रहल छन्हि हमर माथ सन्न भए जाइत अछि । ई अन्याय होएत, हमरा संग छल होएत । नहि प्रभा, ई हम कदापि नहि होमय देवैक—अहाँ सिर्फ हमर छी—सिर्फ हमर । बस अहाँक संग चाही—दुनिया के स्पष्ट कहि देवैक—हम प्रभा कें अपन अर्धांगनी बनबऽ चाहैत छी ।

[दीर्घ साँस छोड़ैत चुप होइत अछि ।]

प्रभा : अहाँ सिरियस (Serious) भऽ गेलहुँ । हम एक बेर तऽ कहि देलौ, प्रभा सिर्फ अहाँक छी । हम अहाँक संग छी । Relax, मुदा एकटा बातक ध्यान रहए ।

प्रभाकर : कोन बात ?

प्रभा : आवेश मे आबि कऽ निर्णय लेबा सँ पूर्व अपना मे साहस आ दृढ़ता आनब आवश्यक ।

प्रभाकर : हम ताइ लेल प्रस्तुत छी । आइ प्रोमिस—I promise.

[दून गोटे हाथ मिलाकऽ शपथ पूर्ण स्थिति मे ठाढ़ अछि । प्रभाकर मूरी हिला हँ कहैत अछि ।]

जीवेश : *(प्रवेश)* रौ बँहि दिन भरि गप्पे लड़ेबहक कि खेबो करबहक । भूख नहि लगै अछि । खेनाइ परसल अछि । जल्दी सँ जइयौक ।

[प्रभाकरक नजरि मिललाक बाद प्रभा मुस्कुराइत अछि। जाइक उपक्रम होइत अछि ।]

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : प्रथम

दृश्य : तेसर

[स्थान : लीलाम्बर बाबूक चौमठ दलान जे चौकी, टेबुल एवं कुर्सी सँ सुसज्जित अछि । लीलाम्बर बाबू अखबार पढ़ै मे मस्त छथि। मंच पर प्रकाश पड़लाक किछु पलक बाद झटकल डेग मे दलाल काका एवं पाँछा सँ चेलाक प्रवेश ।]

लीलाम्बर बाबू : *(अखबार राखैत)* आउ आउ समधि, की हाल चाल अछि यौ ।

दलाल : हाल-चाल की पूछैत छी—तहन घीच-तीर कऽ ठीके-ठाक चलैत अछि ।

चेला : की कहू एहिबेर लोक कुटमैतियो कम केलकहैं ने ।

लीलाम्बर : *(आश्चर्य)* कुटमैती कम केलकहें ? एहि सँ हिनका की खगलन्हि ।

चेला : इएह तऽ बात छैक । ओहिये सँ तऽ हिनकर सबटा चलैत छन्हि ।

दलाल : *(चेला के लग जाइत)* चेला.......

चेला : की भेल मालिक ?

दलाल : *(बुझवैत)* हम एखन समधि के एहिठाम आएल छी । एतहं कचकचवै वला बात जुनि बाज ।

चेला : वैह लिअ सत्त बात बाजू तऽ दुतकारए लगैत छी । *(लीलाम्बर बाबू सँ)* मालिक, ई सब बात जे हम कहलौं से सबटा झूठ कहलौं, माफ करब ।

लीलाम्बर : *(चेला सँ)* तू चुप-चाप बैसह ने । तू तऽ नोकर ने छहुन समधि के है । तोरा हमरा सबहक बात मे टोन देबाक कुनू जरूरी नहि छ ।

दलाल : छोड़ि दियौक समधि, नोकर-चाकरक जे एखन हाल छैक से तऽ बुझिते हेबैक ।

लीलाम्बर : नहि-नहि, हमरो सैह कहब अछि, किछ अहाँक नोकर बेसिये बजैत अछि ।

[चेला नोकर शब्दक प्रयोग पर खिन्न अभिनय करैत अछि । दलाल काका इसारा सँ बैसैक लेल कहै छथि ।]

लीलाम्बर : हाँ, आब कहू समधि, एखन आवैक कुनू विशेष बात अछि कि ?

दलाल : एक तरफ सँ देखू तऽ किछु बात नहि अछि । परन्तु बात कोना नहि अछि—बहुत बड़का बात अछि ।

लीलाम्बर : बड़ा मुस्किल वला बात अछि ।

चेला : से की यौ मालिक ।

लीलाम्बर : अहाँ सब तऽ अपन बाजल बात अपनहि सुनै जाइत छी । आखिर बात की छी से हमहू तऽ बूझी ।

दलाल : कहैत छी, कहैत छी, एतेक हरबरेला सँ ओ बात सब थोरबे होइत छैक ।

लीलाम्बर : तहन सँ बात, बात, बात भऽ रहल अछि—आ बातक कुनू पत्ते नहि अछि ।

चेला : मालिक, ई की कहता । बात बहुत बड़का अछि ।

लीलाम्बर : *(तमसाइत)* चुप, ई बात तऽ हमर माथा खराब कऽ देलक । (रुकिके) आबहुँ तऽ बाजू की बात छी ।

दलाल : बजैछी, बजैछी । बात इएह छी जे अपनेक दोसर बालकक प्रति घटकैती मे आयल छी ।

लीलाम्बर : *(उत्तेजित)* की कहलौं । हे, जे बजलौं से बजलौं दोसर बेर फेर मुँह सँ ई बात नहि निकालब ! आब हम ओहने कर्म करब जे अपन बालक के अहाँ गाम कुटमैती करब । हित तऽ छोड़ू दुश्मनक बेटोक जँ अहाँ गाम कुटमैती ठीक हेतैक तऽ हम रोकि देबैक ।

दलाल : से की भेल समधि ?

लीलाम्बर : हैत की, एहि सँ पहिलको कुटमैती तऽ अहींक द्वारा भेल छल ने । ओहि महक एखन तक एक हजार टाका बुड़ले अछि ।

चेला : मालिक एकटा बात कहू ।

लीलाम्बर : की ?

चेला : ओ एक हजार टाका नहिए देलक तऽ की हेतैक । कोन परिश्रमक कमाएल टाका छल ।

लीलाम्बर : परिश्रमक कमाएल । परिश्रमक कमाएल नहि छल तऽ ओहिना रौ । एकटा बेटाक लेल दस-दस टा बेटीक मुँह देखह पड़ैत छैक । से भगवान हमरा लगातार दस टा बेटे देने छथि । ओहि जन्मक बनाएल नहि अछि तऽ ओहिना रौ ।

चेला : ई बात तऽ एकदम ठीक कहैत छी मालिक । बेटी तऽ एखुनका युग मे पापिये टा के होइत छैक । एतेक लोक बैसल छथि, किनको मोन होइत छन्हि जे हमरा बेटी दैथ भगवान । किनको नहि मोन होइत छन्हि ।

लीलाम्बर : धुर बताह कहाँ के । अरे ई गरीबहा सब लाखक-लाख टाका कत्तह सँ आनत जे भगवान सँ बेटी मांगत । बेटी मंगनाइ माने भेल अपन गड़दनि पर अपनहि सँ कुरहरि मारनाइ । बेटी जखनहि होइत छैक, तखने सँ लोक डाँर सक्कत करए लगैत अछि । *(बात बदलि)* एकटा बात बुझैत छियैक समधि !

दलाल : से की समधि !

लीलाम्बर : भगवानो तऽ आन्हरे छथि ने । गरिबहाक घर मे बेटीक भरमार कऽ देने छथिन्ह । देखू, हमरा जे बेटीक सौख होइत अछि तऽ हमरा एकोटा बेटी नहि भेल । की कहू बेटीक आश मे जखन नौ टा बेटा भएगेल तऽ कनियाँ कहलैथ....

चेला : कनियाँ की कहलइथ मालिक ?

लीलाम्बर : जे एहिबेर बेटी हो वा बेटा हम आपरेशन निश्चित करा लेब । देखू जे दशम सेहो बेटे भए गेल । अन्त मे घरवाली कहली अहाँ के खाली बेटे लिखल अछि । बेटी नहि होयत ।

चेला : अहाँ की कहलियन्हि मालिक ।

लीलाम्बर : हम की कहितियन्हि—हुनकर बात मानि गेलौह ।

चेला : अहाँ हारि किएक मानलहुँ मालिक—एक धक्का आरो देखतियैक ।

दलाल : औजी समधि, की अहाँ बतहा के गप्प मे बाझल छी ।

लीलाम्बर : अच्छे-अच्छे तऽ हम एकरा संग गप्प करैत छलहुँ । अहाँ हमर गप्प नहीं सुनैत छलौं की ?

दलाल : हाँ, हाँ हमहू सुनैत छलहु की । आब बात विचार पर आबू ने ।

लीलाम्बर : औजी, हम आब तखनहि अहाँ गाम कुटमैती करब जखन हमर एक हजार टाका ऊपर भए जायत ।

चेला : मालिक, अहाँक ई बात कहनाइ एकदम अनसोहाँत अछि किएक तऽ बेटीबालाक घर सँ जखनहि बेटी चलि गेलैक—माने ओकर दुरागमन भऽ गेलैक ओ सबटा बिसरि जाइत अछि ।

दलाल : तो चुप ! समधि, एहिबेर ओना नहि हएत । जे बात हैत सबटा हमरा पर रहत ।

लीलाम्बर : ठीक अछि, कतेक टाका ओ गनए चाहैत छथि ।

दलाल : अपनेक माङ कतेक अछि । तेना कऽ बजवैक जे बोझ उठि सकै ।

लीलाम्बर : पचहत्तर हजार टाका तऽ कैक गोटा दए गेलाह । मुदा हम पचासी सँ कम नहि भेलियन्हि । तहन कुटमारे मे अहाँ कें की कहब अहीं एकबेर बजियौक ।

दलाल : एहि लड़का के पचहत्तर हजार कियो नहि देत ।

लीलाम्बर : अहाँ तऽ जनिते छियैक एखन हमरा खानदाने मे पचहत्तरिक हवा बहल छैक ।

दलाल : ओहि सँ कम नहि भऽ सकैत छैक की ।

चेला : ओह, अहाँ तऽ बुझवे नहि करैत छियैक बात । ओहि सँ कम मे मालिक कें घाटा लागि जेतन्हि । कारण एतेक मे तऽ प्रायः खरीदे छन्हि ।

दलाल : चेला, तोरा बजैक धोखा-धरी नहि छौक । समधि एहि लड़का के एतेक कियो नहि देत ।

लीलाम्बर : समधि, अहाँ कि बात करैत छी । अहाँ एहि सँ पहिलको लड़का के पचहत्तर मे करेलौं । हमर छोटका पित्ति अपना बेटा कें करोलथि । हमर बड़का भैया अपन छोटका बेटा के करेलैथ—सबके पचहत्तर हजार टाका देलकैक । एहि दुआरे पहिने कहि देलौंह जे हमरा खानदाने मे पचहत्तरिक हवा बहल छैक ।

दलाल : ई बात तऽ कहि देलियैक जे पचहत्तरिक हवा बहल छैक । मगर जतेक लड़का एखन अहाँ गनेलौं तेहने मे सँ की अहूँक ई बालक छथि ।

लीलाम्बर : तऽ की ओकरा सबके नाङरि लटकल छलैक । कोन चीज मे ओकरा सबसँ हमर बेटा कम अछि यौ ।

दलाल : कम कोना नहि अछि—ओ सब पढ़लक-लिखलक तऽ नौकरी करैत अछि । आ अहाँक बेटा के दू साल बी० ए० पास केना भऽ गेल । लेकिन एखन तक कुनू गोरा-गोटा बैसल ? देखू समधि, हम अहींक लेल कहैत छी ।

लीलाम्बर : की कहैत छी हमरा लेल ।

दलाल : जँ एहि शुध मे बेटाक विवाह नहि भेल तऽ अगिला साल घटक एकदम नहि आयत ।

लीलाम्बर : अहीं कहने घटक नहि आयत ।

दलाल : कने हमरो बात मानू ने समधि । लोक मोडर्न भए गेल । सब शिक्षित आ रोजगारी लड़का ताकैत अछि । अहाँक बेटा दूचारि टाका आनत कंतह सँ तऽ फुकिते अछि ।

लीलाम्बर : आखिर अहाँ कोन जाल मे फसवह चाहैत छी ।

चेला : हमर मालिक के कहव छन्हि, किछु टाका मे कटौती कऽ दियौक आ बेटाक विआह टटके शुध मे करा लिअ ।

लीलाम्बर : कतेक कम करैक लेल कहैत छी । जाउ दू हजार टाका हम छोड़ि देलौंह ।

चेला : मालिक मात्र दू हजार ? मालिक हजार दू हजारक बड़दो मे लोक दू चारि सौ टाका छोरा लैत अछि । ई तऽ पचहत्तर हजारक बड़द नहि बर अछि ।

दलाल : *(प्रसन्न मुद्रा)* वाह....वाह रे चेला, एतेक समय मे एखनहि टा तू ठीक बात बजलह ।

चेला : औजी, कुनू अपन बनायल थोरबे बजलहुँ । सबटा तऽ अहींक बनायल थीक जकरा हम जमि कऽ रटने छी ।

लीलाम्बर : आखिर अहाँ कतेक पर आनह चाहैत छी ।

दलाल : हम...हम एकावन हजार टाका देब ।

लीलाम्बर : की बजलहुँ, जे बजलहुँ से बजलहुँ—फेर सँ ई बात दोहरायब जुनि । हेओ एकावन हजार टाका तऽ एखन जकरा घरारी पर कुकुर-बिलाड़ि हगैत छैक तकरो दैत छैक ।

चेला : तमसाउ जुनि मालिक ।

लीलाम्बर : देखू हम लास्ट बेर कहि रहल छी । एहि सँ एक टाका निच्चा नहि होयत ।

दलाल : जल्दी बाजू ने ।

लीलाम्बर : पैसठ हजार टाका लागत.....

[दलाल काका किछु बाजह लगैत छथि, चेला मुँह दाबि दैत छन्हि ।]

चेला : आब अहाँ किछु नहि बाजू । एहियो मे खूब हैत ।

[दलाल काका अपन मुँह पर सँ चेलाक हाथ तमसाइत जबरदस्ती हटवैत छथि, हास्यास्पद अभिनय रूपे ।]

दलाल : चेला तू.....

चेला : माने हम कहलौं एहि सँ कम मे मालिक के घाटा लागि जेतैन्ह । किएक तऽ हिनका खानदाने मे पचहत्तरक हवा बहल छन्हि ।

[समर ट्रे मे चाह नेने आबि रहल अछि बात सभ सुनैत ।]

समर : बाबूजी एकटा बात पूछू.... ।

लीलाम्बर : पूछह.... ।

समर : किनकर....एखन किनकर विवाह ठीक भऽ रहल अछि ।

लीलाम्बर : चाह दए कऽ तो आंगन जाह बाद मे कहबह ।

चेला : मालिक बौआ सँ बात छुपावैत किएक छियन्हि । बौआ अहींक विआह ठीक भए गेल एखन ।

समर : हमर विवाह....

चेला : हाँ, हाँ अहींक विआह तऽ ठीक भेलहैं ।

समर : बाबूजी हम एखन विवाह नहि करब । जाबेतक नौकरी नहि भऽ जाएत ।

दलाल : बौआ नौकरी भरोसे जँ विवाह के टारब तऽ फेर कुमारे नहि रहि जाइ....।

लीलाम्बर : तो एखन आंगन जाहने । बाद मे तोरा संग हम बात करब ।

समर : हम तऽ जाए रहल छी बाबूजी । मगर एखन हमर विवाह ठीक कए गलत निर्णय लेलौह अहाँ बाबूजी । *(दलाल सँ)* जँ अहाँ सब टाका सँ हमरा किनह चाहैत छी तऽ आपस जाउ । एखन तऽ नहि जँ कहियो विवाह करब तऽ दहेज नहि लेब ।

लीलाम्बर : *(तमसाइत)* तू अंगना जाइत छह की नहि ।

[समर चाहक ट्रे लएकऽ प्रस्थान करय लगैत अछि ।]

चेला : बौआ रुकू रुकू । अहाँ के ने जाइक लेल कहलैथ । चाह के थोरबे-थोर । चाह तऽ सरा गेल होयत । तैयो चाह हमरा सबके देने जाउ ।

[समर चाह राखि उदास मुद्रा मे प्रस्थान करैत अछि ।]

लीलाम्बर : *(चाह पीबैत)* एकटा बात कहनाइ बिसरि गेल छलहुँ समधि ।

दलाल : से की औ समधि ।

लीलाम्बर : से इएह लोक कियो जँ पूछत जे कतेक टाका गिनती हेतैक तऽ ओकरा पचहत्तरि हजारक नाम कहवैक । किएक तऽ ई हमर खानदानक सवाल अछि । हमर समाज मे प्रेस्टिज नहि डाउन हुए ।

दलाल : एहि मे खानदानक सवाल आ प्रेस्टिज डाउन हेबाक की बात यौ ।

लीलाम्बर : अरे समधि, अहाँ बताह भऽ गेलौं की । सबहक बेटा के पचहत्तरि हजार देलकैक । हमरा बेटाके बारे मे जँ लोक बूझत जे एतबे टाका देलकन्हि तऽ हमरा समाज मे कोन स्थान रहि जायत यौ । कुनू स्थान नहि रहि जायत । एखन तऽ समाज मे मान्यता बेटा के दहेज जाहि हिसाबे भेटैत छैक ओहिये पर आधारित अछि । जकरा जतेक दहेज भेटैत अछि ओकरा ई समाज ओतेक सुखी-सम्पन्न आ नीक लोकक पदवी दैत अछि ।

दलाल : एहि सब बात सँ अहाँ एकदम निश्चिन्त रहू । अहाँ के पचहत्तरि की पचासी कहेबाक अछि तऽ से उड़िया देब ।

चेला : मालिक एहि मे तऽ हमरा सबके बेसिये मुनाफा अछि ।

दलाल : चेला.....

चेला : माने हमर कहब अछि हमरो सबके नीक स्थान देत समाज ।

लीलाम्बर : नहि-नहि पन्नहत्तरे रहए दियौक । रहल बर-बरियातीक गप्प से खान-पीनक दिन कय लेब ।

दलाल : बेस तऽ एखन हम सब चलैत छी ।

[नमस्कार-पाती होइत अछि । चेला आ दलाल काकाक प्रस्थानक संग लीलाम्बर बाबू सेहो अखवार लैत प्रस्थानक मुद्रा बनवैत छथि ।]

मंच अन्हार होइत अछि

●

अंक : द्वितीय

दृश्य : पहिल

[स्थान : गामक रास्ता । प्रभाकर गाम जारहल छथि । प्रभा अरियातैक लाथे प्रभाकरक संग अछि । किछु साइकिल आगा बढ़ा प्रभाकर स्टेण्ड लगा ठाढ़ करैत अछि ।]

प्रभा : आब हम घुरि जाइत छी ।

प्रभाकर : कुनू बेशी दूर नहि एलौह । एखन तऽ अहाँ अपनहि गामक सीमा मे छी ।

प्रभा : लोक देखत तऽ की कहत ।

प्रभाकर : की कहत, युवक आ युवती गप्प करैत अछि सैह ने कहत।

प्रभा : लोक किछ दोसरे अर्थ लगा लेत ।

प्रभाकर : हमरा अहाँक बीच जँ सम्बन्ध ठीक रहत तऽ एहि मे लोक के दोसर किछु अर्थ लगा कऽ भेटवे की करतैक ।

प्रभा : बात मानू ने, हमरा आब जाए दिअह ।

[प्रभा जाइ लगैत अछि ।]

प्रभाकर : रुकू प्रभा ! प्रभा आइ हमरा अहाँ सँ जरूरी बात केनाइ अछि ।

प्रभा : अहाँ कें तऽ रोज-रोज जरूरीये बात रहैत अछि । फुसियों ठाढ़ कराके हमर संग-संग अपनो समय के नष्ट करैत रहैत छी ।

प्रभाकर : नहि-नहि प्रभा, रोज-रोजक बात छोड़ू, आजुक बात मे सत्यता अछि ।

प्रभा : अच्छे, तऽ की बात छी जल्दी बाजू......।

प्रभाकर : *(सकुचाइत)* बात येएह....छी....जे हम अहाँक संग आब शीघ्रे विवाह कऽ लेबऽ चाहै छी ।

[प्रभा लजाइत भागऽ लगैत अछि । परन्तु प्रभाकर आगाँ सँ घेर लैत अछि ।]

प्रभाकर : एहि मे लाजक कोन बात छैक । प्रभा, ई विवाहक पवित्र बन्धन तऽ युग-युगान्त सँ आबि रहल अछि ।

प्रभा : *(भावुक)* हमरा अहाँक प्रेम सम्बन्ध के ई समाज स्वीकारत ? *(चिन्तित)* नहि, ई निर्दय समाज एहि बात कें कहियो नहि स्वीकारत । एकरा अनुचित सम्बन्ध कहत ।

प्रभाकर : *(उत्साहित करैत)* प्रभा एना विचलित किएक भए गेलहुँ—धैर्य सँ काज लिअ । आहाँ की कहलहुँ प्रभा—अनुचित सम्बन्ध ? की हमरा अहाँक बीच अनुचित सम्बन्ध अछि ? जे बात निकालि लेलहुँ मुँह सँ से निकालि लेलहुँ । एहन बात फेर दोसर बेर नहि बाजब । *(रुकि)* सत्य कहैत छी प्रभा, हमरा अहाँ सँ प्रेम भए गेल अछि । अहाँ हमरा हृदय मे बइस गेल छी जकरा हम कहियो बिसरि नहि सकैत छी । अच्छा, एकटा बात पूछू प्रभा ?

प्रभा : *(मूड़ी हिलाके)* पूछू.....

प्रभाकर : की अहाँ के हमरा सँ प्रेम नहि अछि ? की अहाँ हमरा बिसरि सकैत छी ?

प्रभा : नञि, कहियो नञि । परन्तु......

प्रभाकर : परन्तु की ?

प्रभा : अपन समाज अहाँके स्वीकार नञि करत ।

प्रभाकर : किए स्वीकार नञि करत ? विवाह सन पवित्र बन्धनके जौं शिक्षित युवा-युवती स्वयं मर्यादित करथि तऽ अइ मे

समाज के की क्षति ? लेन-देन आ निष्प्रयोजन खर्च के रोकल जाय तऽ अइ मे की हानि ? एकटा योग्य कन्या के योग्य वर भेटइ तऽ की अनुचित ?

प्रभा : अहीं जेकाँ जँ सब बूझऽ लगितैक तऽ इ स्थिति थोरे रहितैक ।

प्रभाकर : अरे ई समाज तऽ विवाह के एकटा धंधा बना लेने अछि। जँ अहाँ संग दी तऽ एहि धंधा के किछु हद तक रोकवा मे सफलता प्राप्त कएल जा सकैत अछि ।

प्रभा : अच्छे, से कोना......

प्रभाकर : हम अहाँ आदर्श विवाहक बंधन मे जुड़ि कऽ । आइ हम अहाँ एहि तरहक बात करब—कालि हमरा सबहक देखा-देखी कतेको नव पीढ़ीक लोक एहि रास्ता पर चलत । धीरे-धीरे दहेजक अन्त भऽ सकैत अछि ।

प्रभा : हम कऽ की सकैत छी । ई समाज तऽ बेटीक पसिन्नके मान्यते नहि देने अछि । कहुना ने कहुना ओकर विवाह करा दैत अछि । लगइत छैक जेना जान पर पड़ल होइक। हमर बाबूजी कतौ दोसर ठाम विवाह ठीक कऽ रहल छथि। एहि अवस्था मे हम की करब ।

प्रभाकर : हम अहाँक बाबूजी सँ भिक्षा रूपे मांगह चलि जाएब । प्रभा, हम एकटा सपना सजौने छी जकर मुख्य नायिका अहाँ थिकहुँ । अहाँ बिन हमर जीनाइ असम्भव अछि । सपना के यथार्थ मे जरूर बदलब, मात्र अहाँक संग चाही। मात्र अहाँक संग प्रभा......।

प्रभा : हमहूँ पढ़ल-लिखल कन्या छी । समाजक एहि कुरीति के कखनहुँ नहि मानवैक जाहि सँ हमर सजाओल सपनाक

विनाश हो । विवाह एकटा नाटक नहि छी जाहि मे किछु समयक लेल पति-पत्नीक अभिनय कएल जाइत अछि । विवाह तऽ ओ पवित्र बन्धन छी जाहि मे बन्हेलाक बाद पति-पत्नी के जीवन भरि संग निबाहऽ पड़ैत छैक ।

प्रभाकर : तैं विवाह केनिहार कें पूर्ण अधिकार हेवाक चाही जे अपना योग्य जीवन-संगी चुनैथ । तखने पति-पत्नी शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कऽ सकैत अछि ।

[तखनहि प्रभाकरक नजरि दूर पड़ैत अछि । किछु काल चुप रहैत अछि ।]

प्रभा : की भेल, चुप किएक भऽ गेलौं.....................।

प्रभाकर : प्रभा, प्रेम मे जँ बाधा आबए तऽ बूझू जे प्रेम निश्चित सफल अछि । जाउ प्रभा अगिला भेट तकक लेल ।

प्रभा : की भेल, हठात् अहाँ मे ई परिवर्तन.....कियो बाधा तऽ नहि केलक ।

प्रभाकर : ओ जे दूर मे साइकिल घिसियेने आबि रहल अछि, हमर संगी छी, चलि जाउ, ओ नजदीक आयल जाइत अछि ।

प्रभा : हम एखन नहि जायब..........।

प्रभाकर : बात मानू ने............।

प्रभा : एकबेर कहलहुँ ने नहि जायब तऽ बूझू नहि गेलहुँ ।

प्रभाकर : प्लीज प्रभा । अहाँके हमर सप्पत.........।

[प्रभा प्रभाकरक दिश तकैत पाँछा हटैत प्रस्थान करैत अछि । तकर बादो प्रभाकर लीन भए तकिते रहि जाइत अछि । तखनहि पेंचर साइकिल संग समरक प्रवेश । ओ घंटी बजवैत अछि तकर बावजूद प्रभाकर प्रभाक याद मे लीन रहैत अछि । साइकिलक अगिला पहिया प्रभाकरक शरीर सँ स्पर्श करवैत अछि । प्रभाकर अकचकाइत तकैत अछि ।]

प्रभाकर : दोस रौ....की हाल चाल छौक ।

समर : ठीक छी । अपन ठीक छौक ने .?

प्रभाकर : चलैत छौ कहुँना कऽ । एखन एमहर कतए सँ आबि रहल छैं ?

समर : मधुबनी गेल छलहुँ । सैह आपस आबि रहल छी । रँटी चौक सँ आँगा एलहुँ की पछिला चक्का ब्रस्ट कऽ गेल । ने उम्हरे मिस्त्री छलैक ने इम्हरे छैक । तैं पैदले आबि रहल छी ।

प्रभाकर : मिस्त्री तऽ आब चौबट्टी पर भेटतौ माने लाल चौक पर । अच्छा, मधुबनी किएक गेल छलैं ?

समर : किएक, कल्हुका इम्पलाइमेंट न्यूज नहि सुनलहक की ?

प्रभाकर : किएक रौ, की एहन देलकैक कल्हुका न्यूज मे ।

समर : तूहू आइकाल्हि कतऽ रहैत छैं । सात टा किरानीक सीट खाली भेलैकहैं मधुबनी कलक्ट्रियट मे । तकरे बहाली हेतैक । सैह फार्म आनक लेल गेल रही ।

प्रभाकर : कम सँ कम हमरा जुनि ठग । जरूर किछु दोसर बात छियौक ।

समर : कुनू दोसर बात नहि थीक । तोरा किएक ठगबौक ।

प्रभाकर : तहन आब बात के फरिछाइये कऽ बाजी तऽ कोनो पाप नहि । गाम मे जहाँ की शुद्ध चालू हैत की उम्मीदवार सब कॉलेज गेनाइ शुरू कऽ देताह, तऽ उम्हर फार्म भरताह तऽ इम्हर अखबार मंगवह लगताह । घड़ी-घड़ीक समाचार राखह लगता । भरि शुद्ध सूट-बूट लगा कऽ तैयार रहता । गाम सँ जाइक नाम नहि लेताह । भरि शुद्ध तऽ चाहक खपत किछ बेसिये होमए लागत । एतेक होइत

अछि जे कहुना कऽ घटक महराज हमरा दलान पर बैसाथि । जखनहि शुद्ध खत्म होइत अछि संगहि ईहो सब बात खत्म भऽ जाइत अछि आगला शुद्ध चालू होइ तकक लेल । हमरा तऽ बुझना जा रहल अछि येह सब बात तोरा संग छौक । *(टाक बात बदलि)* की बात छियौक घटक-तटक आएल छलौ की ?

समर : तहन सँ तू हमरा बड़ बोर केने चलि जा रहल छैं । हम तऽ बिसारये गेल छलहुँ ।

प्रभाकर : से की रौ..........।

समर : हम तऽ तोहर सबटा देख लेलियौक ।

प्रभाकर : तू की हमर सबटा देखलैं रौ..........।

समर : जकरा संगे एखनहि गप्प करैत छलैं ओ लड़की के छलौक । चल ने आइ सबटा बात गाम पर कहैत छियैक ।

प्रभाकर : *(अभिनय कऽ)* हे गोर लगैत छियौक, ई सब बात गाम पर जुनि बजिहें । जँ बुझिगेल तऽ जीवह नहि देत ।

समर : पहिने कह के छलौ..........।

प्रभाकर : मर्र वैह एखन तक तोरा बुझल नहि छौक, हमर बड़का भैयाक एहिये गाम विवाह छियन्हि । हुनके सारि छलैन्ह । मतलब हमर जे भौजी छौ ने तकरा सँ छोट छैक ।

समर : *(चुटकी लैत)* अच्छे तऽ आब फरिछायल ने बात । तू ओकरा संगे लैन मारैत छैं ।

प्रभाकर : *(भावुक स्वर)* हँ समर, हम ओकरा संग विवाह करए चाहैत छी । एहि मे तू संग देमह ने ?

समर : निश्चित देवौक । चल ने एखनहि ओकरा बाप सँ बात कऽ लेब ।

प्रभाकर : नहि-नहि, एखन नहि । समय आबह दहिन । ओ लड़की तऽ बेहद चाहैत अछि । परन्तु समाज सँ डेराइत अछि । ताहि कारणे किछु पाँछा हटैत अछि ।

समर : तोहर ई बात हमरा पर रहलौ । हे एकटा बात हमरो लेल तोरा करए परतौक ।

प्रभाकर : हमरा सँ कोन काज छौक ?

समर : तू तऽ एहि गाम मे सबके चिन्हैत हेबही ।

प्रभाकर : लगभग सबके चिन्हैत छियैक । तोरा कोन काज परि गेलौक एहि गाम मे रौ ।

[समर जेबी सँ पुर्जा निकालह लगैत अछि । किछु क्षण तकलाक बाद ।]

समर : ओह, जेबिये मे छलौक कतौ खसि पड़लौ ।

प्रभाकर : की खसि पड़लौ रौ...............।

समर : हे, कतौ बाजिहैं नहि ।

प्रभाकर : पहिने कह तऽ...............।

समर : हमरो विवाह एहिये गाम मे ठीक भेलौक ।

प्रभाकर : *(आश्चर्य संग धैर्य)* आब बुझलियौक ने तोहर मधुबनी एबाक नाटक । तू फार्म की कपार भरमह तू तऽ कनियाँ देखबक खातिर एम्हर आएल छलाँह । अच्छे नाम कह ककरा एहिठाम ।

समर : नामे पत्ता वाला तऽ पुर्जा तकैत छलियैक । कतौ हरा गेलौ । आ यादो नहि अछि । एतेक पता चललहैं जे कनियाँ आइ० ए० पास केलक हें । घर साइद सकिया टोल मे छैक । हे, ठीक सँ तामे याद कर हम कने डोल-डाल सँ भऽ अवैत छी । *(समरक प्रस्थान)* ।

प्रभाकर : *(किछु अटकलाक बाद स्वतः)* की कहलक ? लड़की आइ० ए० पास केलक हें । ओकर घर सकिया टोल मे छैक । साइद ई प्रभा के बारे मे तऽ नहि कहैत अछि ? ई बात तऽ प्रभे सँ मिल रहल अछि । *(विचलित)* नहि, नहि ई सरासर झूठ छी । प्रभा सिर्फ हमर छी, सिर्फ हमर । ओ हमरा छोड़ि दोसराक कदापि नहि भऽ सकैत अछि ।

[तखनहि समरक प्रवेश । प्रभाकर अपना-आप के सम्हारैत अछि ।]

समर : की अपना मोन मे बुदुर-बुदुर बाजि के विचारैत छै रौ । एखन तक मोन नहि पड़लौह ।

प्रभाकर : बिना नाम पता के कोना मोन पड़ि सकैत अछि । सकिया टोल कोनो कनियेटा टोल थोरबेक छैक । आ आइ-काल्हि तऽ घर-घर आइ० ए० पास लड़की रहैत छैक।

समर : अच्छे छोड़ ई माथा-पेची । जहन ठीक भऽ गेलैक तऽ बुझबे ने करबिही । चल आब साइकिल तऽ अगले चौक पर ठीक हेतौक । हे कपड़ा-लत्ता साफ कके रखिहैं । बेसी उम्मीद छौ नौ तारिखक शुद्ध मे निश्चित बरियाती जेमह ।

प्रभाकर : *(उदास भए)* तु किएक चिन्ता करैत छैं । भगवान जँ तोहर साथ देलखुन्ह तहन तऽ सरयातियो दिश सँ हमरा देखमा । चल देरी भऽ गेल.......।

[दूनू गोटा अपन-अपन साइकिल सम्हारैत प्रस्थानक मुद्रा ।]

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : द्वितीय
दृश्य : दोसर

[स्थान : दलाल काकाक दलान । दलाल काका खाट पर बैसि हाथ मे रुद्राक्षक माला लेने ध्यानमग्न छथि । गरीब झाक प्रवेश । हुनका हाथ मे एकटा झोड़ा छन्हि, जाहिमे टाका रहबाक आभास होइत अछि । गरीब झा आबि खाटक एक भाग मे बैसि जाइत छथि । (जँ टाकाक व्यवस्था भऽ सकए तऽ देखा सकैत छी ।) किछु कालक बाद दलाल काकाक ध्यान टूटैत अछि ।]

दलाल : *(देखिकऽ)* तों किएक एहि जार मे कष्ट केलह । हमहू तऽ तोरे ओहिठामक लेल विदा भेल छलहुँ ।

गरीब : की हेतैक एहियो लाथे तऽ भेंट-घाँट भऽ जाइत अछि ।

दलाल : से तऽ ठीके कहैत छह ।

गरीब : दलाल काका टाकाक कोना की बात रहल ।

दलाल : से की पुछैत छह । पचासी हजार पर गीरह बान्हि देने छलाह ।

गरीब : *(अकचकाइत)* पचासी हजार....। तकर बाद दलाल काका, कतेक पर फैनल भेल ।

दलाल : फैनल तऽ ठीके ठाक रहल । तू तऽ जनिते छहक हमरा सनक रगरी लोक जहन कोनो घटकैतीक लेल कोनो दलान पर बैसि जाइत छी तऽ ओहि दलान पर सँ तखन तक नहि उठैत छी, जामे तक की सब बात पूर्ण रूपे तय नहि भऽ जाइत अछि ।

गरीब : आखिर कतेक पर राजी भेलाह ओसब ।

दलाल : भरल दरवज्जा लोक छल । बहुतो समय रगरा-रगरी चललाक बाद अन्त मे पचहत्तरि हजार पर पूर्ण रूपे तय केलहुँ ।

गरीब : *(विचलित)* पचहत्तरि हजार....। परन्तु दलाल काका ओतेक टाकाक व्यवस्था केनाइ हमरा वशक बाहर वला बात अछि । हम एहि कथा मे नहि सकब । एहि सँ कम टाका जाहिठाम लागत से कथा कतौ ताकि दिअ ।

दलाल : ऐंहो एखनहि सँ तों अछताइ-पछताइ लगलह । अपना मे हुबा केने रहऽ ने । सबटा ने भऽ जेतैक । ई काज सब अपना बुते थोरबेक होइत छैक । भगवान अपनहि ने उबाड़ि देथुन्ह । ई तऽ प्रभुक सबटा लीला छी ।

गरीब : नहिं दलाल काका, हम एकदम नहि एहि काज मे सकब । आब ओ सामर्थ नहि रहल । प्रथम कन्यादान मे हम पूर्ण रूपे टूटि गेलौंह । एखन तीन टा आरो अछि । अहीं कहू ने दलाल काका एतेक टाका हम कतए सँ आनब । कम मे कतौ दोसर ठाम ताकि दियह ने ।

दलाल : अच्छे एकटा बात कहऽ, कतेक टाकाक व्यवस्था छह तोरा लग मे ।

गरीब : हमरा हाथ पर एखन मात्र पचास हजार टाका अछि । ओहिमे बरियातीओक स्वागतक व्यवस्था केनाइ अछि ।

दलाल : एकठाम एतेक मोट टाका कतह सँ एलह ।

गरीब : दलाल काका, रजिष्ट्री आफिस सँ अहीं दलान पर पैर रोपलहुँ - गामो पर नहि गेलौंह ।

दलाल : *(अकचकाइत)* की बजलह रजिस्ट्री आफिस । ऐंहो खसलाहा तरक बड़का कोली बेच देलहक ।

गरीब : हँ दलाल काका, आर कये की सकैत छलौंह । जानि नहि अगिला कन्यादान कोना कऽ करब । आब तऽ मात्र घरार-येटा बाँच गेल । *(रुपया दैत)* एतेक टाका तात्कालिक राखू, पचास हजार अछि । हम गाम पर सँ विचारि कऽ अबैत छी । जँ सबके विचार भ गेलैक आ टाकाक जोगार-पाती भए गेल तहन तऽ कए लेब । जोगार-पाती नहि भेल तहन तऽ.........

[तखनहि चेलाक लालटेन नेने प्रवेश, लालटेन आनि राखि दैत अछि एवं दलाल काका के ताल मे ताल मिला एकटा हास्य उत्पन्न करैत रहैत अछि ।]

दलाल : कने मोन के स्थिर करह आ सोचहक । जँ बेटी के गार्त जीवन मे सानह चाहैत छह तहन तऽ दोसर ठाम कतौ करैक बात सोचह नहि तऽ ई कुटमैती बड़ सनगर छह । भरिजन्म तोहर बेटी खुशी सँ जीवन व्यतीत करतह । लछमनियाँ भेल बैसल रहतह घर मे । रूप बाबूक खानदान के के नहि जनैत अछि एहि परोपट्टा मे—लड़का ओकरे नाइत छी । *(चेला सँऽ)* तो की एतह संगीतमय ताल मिला रहल छैं । ले ई टाकाक झोड़ा आ भगवती घर चलि जो केवाड़ बन्न कके एहि टाकाके गनने आ, कतेक अछि ?

चेला : एही बातक तऽ प्रतीक्षा छल हमरा । लाउ ने ।

[झोड़ा लऽ कऽ चेला प्रस्थान करैत अछि ।]

दलाल : हँ, तऽ हम सैह कहैत छलिअह जे एहन औसर के कियो हाथ सँ निकलह दैत अछि ।

गरीब : दलाल काका कोन बाप के ने मोन होइत छैक जे हमर बेटी सुखितगर घर मे जा कऽ पद्मिनी भए राज करे । एहना हालत मे कए की सकैत अछि मजबूर बाप । लाचारीबश तऽ बेटी के गार्त जीवन मे देमैंहिये पड़ैत छैक ।

[तखनहि टाकाक मोटरी लेने चेलाक प्रवेश]

दलाल : कते भेलौक.... ।

चेला : *(हलचल)* पचास...पचास.....पचास टा.....

दलाल : पचास टाका...... ?

चेला : नहि नहि पचास टाका नहि कहलौं.....पचास सौ.....हँ ठीक पचास सौ टाका ।

दलाल : एहि झोड़ा मे मात्र पचास सौ माने पाँचे हजार टाका छैक ?

चेला : हँ-हँ, आब मोन परि गेल एहि झोड़ा मे पचास लाख टाका अछि ।

दलाल : की कहलैं एहि झोड़ा मे पचास लाख टाका छैक ?

चेला : *(अभिनय करैत)* हे भगवान कहुना आइ हमर इज्जति बचाउ - जल्दी मोन पारह.....इकाई...दहाई.....हँ...हँ... हजार....दस हजार....हँ.....हँ....मोन पड़ल, पचास हजार टाका अछि एहि झोड़ा मे । बाप रे बाप, हकमि गेलौंह, केना कऽ लोक लाखक-लाख गनैत छैक से नहि कहि ।

[झोड़ा दलाल काका सम्हारैत छथि, तखनहि जीवेशक हरबड़ायल प्रवेश ।]

जीवेश : बाबू, अहाँ एतह छियैक । गाम पर तऽ औन्हा-पथारी उठल अछि ।

गरीब : से किएक हौ...... ?

जीवेश : अहाँ संगे जतेक लोक रजिस्टरी आफिस गेल छल - सब गामपर कखन-कहाँ आयल । अहाँ एखन तक रस्ते मे छी ।

गरीब : एहि लेल चिन्ता करैक कोन बात छलैक । सबके तऽ बुझले छैक हमरा कतहुँ सँ आबह मे देरी भऽ जाइत अछि ।

जीवेश : से तऽ बुझले छैक सबके । चिन्ता ककरो अहाँक थोरबे होइत छलैक - चिन्ता तऽ भेलैक पचास हजार टाकाक जे अहाँक संग मे अछि । माए के कहलियैक कूनू चिन्ता नहि करैक छौक । ओ हेथुन्ह कतौ गप्प हाँकैत ।

गरीब : अच्छे चलह, बेश तऽ दलाल काका एखन हम चलैत छी । जेना जे होएत भिनसर विचार कए समाद पठा देब ।

दलाल : भिनसर नहि गरीब ! एखन एहिबातक निर्णय करक परतह कारण कल्हुका खानपीनक दिन ताकि देने छियैक ।

गरीब : ठीक अछि, एखनहि हम आवैत छी ।

[कहैत गरीब आ जीवेशक प्रस्थान । किछु क्षणक लेल मंच अन्हार होइत अछि । दृश्य परिवर्तन होइत अछि । गरीब आ जीवेशक प्रवेश । रास्ताक दृश्य ।]

जीवेश : बाबू एकटा बात पूछू ।

गरीब : पूछह ने.........

जीवेश : मात्र एकटा कोली खेत छल सेहो किएक बेच लेलौं ?

गरीब : एहिलेल उदास किएक छह । कमेवह-खटेवह तऽ फेर खेत किनवह ।

जीवेश : एकटा बात बूझैत छियैक.... ?

गरीब : की हौ .... ?

जीवेश : आब जे कोनो बाध महीस चरबैक लेल जाइत छी तऽ सब मना करैत अछि ।

गरीब : के मना करैत अछि अहाँ के बाध मे महिस चरबै सँ ?

जीवेश : आइये बलाट मे महीस चरबैत छलहुँ । अप्पन सप्पत खाऽ कऽ कहैत छी बाबू, हमर महीष ककरो जजात मे भिड़लो तक नहि छलैक । उम्हर सँ मुखिया काका एलैथ आ कऽहऽ लगलथि एहि बाध मे अल्हुआ तौलैक लेल अबैत छह । एकोबीत छहो एहि बाध मे । काल्हि सँ एहि बाध महीस लके एबहक तऽ टांग-हाथ तोरि कऽ पारि देबह । बाबू....सब सँ गरीब हमहीं सब छी ने एहिगाम मे ?

गरीब : हम सब किएक गरीब रहब । हमर सबहक कियो खैक जोड़ैत अछि थोरबे थोर ।

जीवेश : बाबू हमरा तीन सौ टाकाक जोगार कऽ दियह ।

गरीब : तीन सौ टाका की करबह एखन ।

जीवेश : बाबू हम बम्बई जायब । ओतह जाके खूब टाका कमायब । जखन एक लाख टाका भऽ जायत तखन गाम आएब । आ बहुते रास खेत कीनब । तखन कियो गरीब लोक नहिने कहत हमरा सबके ।

गरीब : *(बुझावैत)* एखन अहाँ बड़ बच्चा छी । नमहर हैब, फेर बम्बई जाएब ।

[तखनहि गुणानन्दक प्रवेश । किछु क्षणक बाद जीवेशक प्रस्थान]

गुणानन्द : के बम्बई जा रहल अछि यौ ? बाप - बेटा मिलके एतेक राति मे एहि एकान्त जगह मे की एकान्ती कऽ रहल छी ।

गरीब : ऐयौ, मुखिया के एना केनाइ ठीक छियैक । हमरा ओहि बाध मे खेत नहि अछि तऽ ओ हमरा बाध गेनाइ रोकताह । एतेक बड़का अन्याय ।

गुणानन्द : की ठीक आ की बेजाए ई सब बात आब रहलैक समाज मे । आब तऽ समाज मे सामाजिकता नामक बाते उठि रहल अछि ।

गरीब : एकटा बात बुझैत छियैक—धनिकहा सबके होइत छैक हमसब, सब दिन धनीके रहि जाएब आ गरीबहा सब सबदिन गरीबे । ओ एकटा युग छलैक जहन सिर्फ भरि पेट भोजन कारने ओकरा दलान पर लोक धरफरान देने रहैत छलैक । आब थोरे ओना.......

गुणानन्द : कोना रहतैक, जमाना परिवर्तन भऽ गेलैक, नीक खराब अपन सब बुझए लगलैक । देश स्वतंत्र बहुत दिन पहिले भेल, मुदा स्वतंत्रताक सही अर्थ एखन बुझलक । जतेक-काल सिर्फ खाइक लेल पेटकुनियाँ देने रहैत छल ओतेक समय मे एखन अपन काज कए कऽ दिन दुगुना आ राति चौगुना कऽ लेलक । हँ तऽ की भेल कुटमैती बारे मे ।

गरीब : एखनहि दलाल काका एहिठाम सँ आबिए रहल छी । बड़ा मोन चिन्तित अछि - देखू कथा तऽ बड़ बढ़ियाँ छैक। मगर पचहत्तर हजार टाका हमरा बुते गनल हैत ? तकर बाद बर-बरियातीक स्वागत ।

गुणानन्द : कतेक टाका हाथ पर अछि ?

गरीब : हाथ पर तऽ पचास हजार अछि...लुटन काका के खसलाहा तरक खेत लिख देलियैन्हि ।

गुणानन्द : एतेक हड़बड़ा कऽ ई काज किएक केलहुँ ।

गरीब : की करितहुँ । दोसर आर उपाइये की छल । जतेक सामर्थ्य अछि ओहि मे कखनो कोनो कमी नहि रखबैक । तहन तऽ कपारक लिखलाहा के बदलि नहि सकैत छी । देखू जे

पचीस हजार टाकाक व्यवस्था हम कोना कऽ करब । कथा तऽ बड़ सनगर अछि ।

गुणानन्द : *(रुपया निकालैत)* नहि, नहि, जे टाका लागत बेटी त सुखितगर घर मे जायत । ई लियह दस हजार टाका आरो दऽ अबियौन्ह ।

गरीब : अहाँ फेर ई टाका....... ?

गुणानन्द : प्रभा जहिना अहाँक बेटी, तहिना हमर । ई टाका हम सहायता रूपे दय रहल छी, मित्र जँ मित्रक काज नहि आयल तऽ फेर....... ।

गरीब : पन्द्रह हजार तऽ तकर बादो बाकी रहतैक ।

गुणानन्द : पन्द्रह हजार जे टाका बाकी रहतैक से लड़का बाप के बुझा कऽ कहि देथिन्ह जे ई टाका बाद मे दुरागमन तक देब । पन्द्रह हजार टाकाक कारने विवाह थोरबे रोकताह । ठीक अछि आब चलैत छी । घटक महाराज के कहि देवैन्ह जे हम तैयार छी एहि कथाक लेल ।

जीवेश : *(प्रवेश)* की यौ एखनो बात सम्पन्न नहि भेल अहाँ सबहक ।

गरीब : कतह सँ फेर घुरि कऽ आबि गेलह ।

जीवेश : गाम पर माय के चिन्ता होइत छलैक सैह कहैक लेल चलि गेलहुँ ।

गुणानन्द : बेस तऽ एखन हम चलैत छी.....

गरीब : ठीक अछि जाउ.....राति बेशी भऽ गेल.....

[जीवेश आ गरीब एक भाग सँ तऽ दोसर भाग सँ गुणानन्द बाबूक प्रस्थान होइत अछि ।]

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : द्वितीय

दृश्य : तेसर

[स्थान : दलाल काकाक दलान । दलाल काका खाट पर बैसि किछु सोचि रहल छथि । भूमि पर बगल मे चेला सेहो बैसल अछि । खाटक तर मे लालटेन कम कय राखल अछि ।]

चेला : औजी दलाल काका कम नफा हुए तैयो, बेसी हुए तैयो सब दिन महापात्र जेकाँ माथा हाथ देने रहैत छी । कम सँ कम आइयो तऽ खुशी मनाउ । एहि गरीब झाक कुटमैती मे तऽ ढेरक नफा होमय वाला अछि । एहिबेर अहाँक नीक जेकाँ पेट भरि जायत । परन्तु हे एकटा बात फरिछाइये कऽ बुझि राखू - एहि बेर हमरो शेयर नीक जकाँ देमह पड़त माने फिफ्टी फिफ्टी..... ।

दलाल : धुर बुरबलेल कहाँ कें, तूँ तऽ सिर्फ अपना शेयर सँ मतलब रखैत छें । कखनो इहो सोचैत छीहीं जे कोना कऽ भरिपेट खाएल जाइत छैक आ ओकरा कोना कऽ पचाएल जाइत छैक ।

चेला : दलाल काका हमरा अहाँ एतेक बुद्धू जुनि बूझू । अहाँ सडे रहना हमर ई दशम साल थिक । पूरा नहि तऽ किछु-किछु दलाली तऽ जरूर सिखलहुँ । अहाँक मरलाक बाद तऽ दलालक पदवी हमरे भेटत । माने हमर कहब अछि समाज दलाल काका तऽ हमरे कहत ।

दलाल : की कहलैं हम मरि जायब । हम एखनहि मरब रौ । एखन हम पचास साल आरो जीब ।

चेला : औजी दलाल काका, अहाँ कोनो अमृत पीब कऽ कहाँ आएल छी जे अहाँ मरब नहि । मरह तऽ परबे करत । अहाँ जँ पचास साल आरो जीब गेलौंह तहन तऽ निश्चित रूपें दलालक पदवी हमरा नहि भेटत । किएक तऽ हमर एखन

पचीसम साल थीक । पचास आ पचीस पचहत्तर होइत छैक । अहीं कहू आइ-काल्हि मे पचहत्तरि सँ बेशी के जीवैत अछि । हे एहन जुलुम नहि करब दलाल काका । एकेटा सपना अछि घटकैतीक दलाल बनबाक । किएक तऽ एहि सँ बेशी टाका नऽ कुनू रोजगार मे नहि छैक । आ एतेक सुख जतह जाउ सरबत, चाह-पान खाइत खाइत तबाह । एतबे नहिने लोक गुणगान सेहो करैत रहैत अछि । नतमस्तक भेल रहैत अछि । किएक तऽ कुटमैती करेनिहार के तऽ ईश्वरक रूप मानल जाइत अछि । आ....हा...हा...भगवान कहुना कऽ ई पदवी हमरो प्राप्त करबहक ।

दलाल : कोन सपना मे तूहू सब समय डूबल रहैत छें । एहि परीक्षा मे जँ तू पास कजेमा तऽ निश्चित सफलता प्राप्त करमा ।

चेला : कोन परीक्षा मे, कने जल्दी कहू ने ।

दलाल : गरीब झाक टाका कोना कऽ पचाएल जायत ।

चेला : एहि परीक्षा मे तऽ बुझू जे पास कए गेलहुँ ।

दलाल : कने जल्दी बुझावह ने ।

चेला : लीलाम्बर बाबू सँ अहाँके कतेक मे बात भेल ।

दलाल : पैंसठ हजार मे ।

चेला : पैंसठ हजार मे.....बस ई तऽ सबके बुझले छैक जे हुनकर खानदाने मे.....पचहत्तरि हजार सबके देलकैक । आ लीलाम्बर बाबू सेहो अपनहिं कहलथि जे सबके पचहत्तरि हजारक बात कहैक लेल । ग़रीब झा सँ पचहत्तरि हजार टाका गनाएब । ओहि मे सँ दस हजार टाका निकालि के राखि लेब ।

दलाल : परन्तु गरीब झा तऽ एखन मात्र साठिये हजार टाका देलक । पन्द्रह हजार टाका बाद मे दैक बात कहलक हें । एहि मे कोन सूत्र लागत से नहि कहि ।

चेला : लगैत अछि दलाली करैत-करैत आब अहाँक माथा संस्लेश भए गेल । दलाल अहाँ थिकहुँ आ विचार हमरा सँ लैत छी । आब हम कारोबार अलग कऽ लेब अहाँ सँ । हमरा अपना आप पर पूर्ण विश्वास भऽ गेल हें । किछु फेरा लगैत अछि तऽ हमर विचार अहाँ सेट करैत छी । दलाल काका आब हम कारोबार निश्चित अलग कए लेब ।

दलाल : एना जुनि बाज । जल्दी सँ कोनो उपाय सेट कर । ई समय मजाक करैक नहि छी ।

चेला : एहि मे दोसर उपाइक कोनो सूत्र नहि छैक । साठि हजार टाका अहाँक हाथ मे थमेलक हें ने यौ !

दलाल : हँ से तऽ देलक हें ।

चेला : ओहि मे सँ दस हजार टाका निकालि लेब कारन एखन जँ नहि निकालब तऽ एहन मौका कहिया भेटत । बाँकी टाका तऽ गरीब झा देबे करतैक ।

दलाल : दस हजार टाका निकालि तऽ लेब । परन्तु खानपीन मे गरीब अपनो ने रहत । ओहो ने देखतैक कतेक टाका गिनती भेलैक ।

चेला : धुर जी, अहूँ बड़ ताल केलहुँ । ओ की बुझतैक । ओ तऽ पुरना ढरराक लोक ठहरल - भीतर सँ एकदम सोझ । छः पाँचक कोनो ज्ञाने नहि छैक । ओकरो आँखि मे धूरा झोंकै मे चलाके लोकक काज छैक । बुझू जे ई दस हजार टाका हमरा सबके हजम भके पचि गेल । अहाँ निश्चिन्त रहू ।

दलाल : छोड़ आब बात के जे भवानी करथिन्ह । राति बेसी भऽ गेलौक, खा-पी कऽ आराम कर ।

[चेला लालटेन निकालि तेज करैत अछि । जाइक मुद्रा ।]

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : तृतीय

दृश्य : प्रथम

*[स्थान : **लीलाम्बर बाबूक दलान । खानपीन दिनक दृश्य । मंच पर उपस्थित छथि गरीब झा, दलाल काका, लीलाम्बर बाबू आ मुख्य सरियाती ।**]*

मुख्य सरियाती : जेसेकी अहाँ सब खानपीन मे एलहुँ हें की.....

गरीब : हँ-हँ, एलहुँ तऽ खानेपीन करैक लेल ।

मु० सरियाती : जेसेकी फेर गाल फुलौने सब गोटा गुमसुम किएक बैसल छी । जेसेकी कार्यक्रम के आगा बढ़ाउ - आगा बढ़ाउ - आरो आगा बढ़ाउ..... ।

लीलाम्बर : कार्यक्रम तऽ एखुनका टाका गिनती सँ शुरू होएत ।

गरीब : दलाल काका देरी किएक करैत छी । जे टाका अछि गिनती कए ने दियौन्ह ।

लीलाम्बर : *(एकान्त जाइत)* दलाल बाबू अहाँ सँ एकटा जरूरी बात छल ।

दलाल : *(जाइत)* की बात यौ ?

[***दुनू गोटा एकटा कोन दिस जाइत छथि ।***]

लीलाम्बर : लोक जँ पूछत जे कतेक टाका गिनती भेलैक तऽ ओकरा पचहत्तरि हजारक नाम कहबैक ।

दलाल : एहि बात लेल अहाँ एतेक हरबराइत किएक छी ।

लीलाम्बर : हरबरइतौं कोना नहि । एहिठामक लोक जँ ई बात बुझिगेल तऽ हमर प्राइस्टिज डाउन भए जायत ।

दलाल : अहाँक प्राइस्टिज डाउन नहि होमह देब यौ । एक पाइ एहिबातक चिन्ता नहि राखू । ककरो कान मे ई खबरि नहि जाइ देबैक ।

मु० सरियाती : जेसेकी अहाँ सब ओहि कोन मे की एकान्ती कऽ रहल छी । जेसेकी फ्रान्ट पर आबि कऽ गप्प करू ने । जेसेकी फ्रान्ट पर..........

[दलाल काका आबि कऽ बैसि रहैत छथि ।]

लीलाम्बर : हाँ तऽ गरीब बाबू आब टाका गिनती शुरू करू ।

गरीब : समधि....... !

लीलाम्बर : देखू, एखन हमरा समधि जुनि कहू । टाका गिनती भेलाक बादे समधि के पदवी शुरू हैत । कहू की कहए चाहैत छी ।

गरीब : हम पन्द्रह हजार टाका एखन नहि दऽ सकब । ई बाकी टाका दुरागमन तक पूर्ति कऽ देब ।

लीलाम्बर : *(खौंझाइत)* लियह भऽ ने गेल ठाढ़ झमेला । एहिये दुआरे पहिनहिये कहि देलौंह जे टाका गिनती भेलाक बादे समधि कहू । *(चिकरैत)* रामू.....रामू.....

नेपथ्य सँ : हँ मालिक....... !

लीलाम्बर : हिनका सबके चाह-पान कराकऽ विदा कऽ दहुन ।

गरीब : एहन बात जुनि कहू लीलाम्बर बाबू । बड़ आशा लऽ कऽ अहाँक दलान पर पैर रोपलौ ।

लीलाम्बर : अपन जँ काज रहैत छैक तऽ लोक अहिना खेखनियाँ पर काज चलबैत अछि । हम तऽ पूर्वहि निश्चय कऽ लेने छलहुँ ओहि गाम फेर कुटमैती नहि करब । ज्येष्ठ बेटाक विवाह करेलहुँ ओहिमहक एक हजार टाका एखन तक पबितै छी ।

गरीब : ओहि तरहक लोक हम नहि छी । हमरा ऊपर विश्वास राखू । एकटा टाका हम नहि राखब ।

लीलाम्बर : ओहो तऽ एहने बात सब कहने छलाह ।

दलाल : लीलाम्बर बाबू, ई टाकाक बात हमरा पर रहल । अगर ई नहि देताह तऽ हम देब ।

लीलाम्बर : नहि-नहि, एहन काज हम फेर नहि करब जे टाका बाकी राखब ।

मु० सरियाती : जेसेकी बड़ ताल केलह । जेसेकी जे आदमी साठि हजार टाका एकमुस्त गान देत ओ की पन्द्रह हजार टाका नहि दऽ सकत । एकटा मोहलत तऽ जेसेकी दियौन्ह ।

लीलाम्बर : ई बात भऽ सकैत अछि । ठीक छैक अगिला शुद्ध मे विवाह होएत । हम वचन दैत छी जामे तक अहाँ हमरा एहिठाम कुटमैती करब तामे तक हम दोसर ठाम बेटाक विवाह नहि ठीक करब ।

गरीब : मात्र १५ हजार टाकाक कारने विवाह अगिला शुद्ध तकक लेल टारैत छी । हमर घर नहिने ओहि गाम सँ चलि जायत । हमरा कन्यादान एखुनका शुद्ध मे केनाइ अत्यन्त जरूरी अछि ।

लीलाम्बर : हम कोनो एहि शुद्ध मे कन्यादान करै सँ रोकि थोरबे रहल छी । हमरो तऽ यैह विचार छल जे बेटाक विवाह टटके शुद्ध मे भऽ जाइत । लेकिन बीच मे टाका मा'ने पन्द्रह हजार टाका, उटपटांग भए गेल अछि । लास्ट बेर कहैत छी सभ टाका देलाक बादे कोनो अगिला बात शुरू होयत ।

मु० सरियाती : जेसेकी अहाँ कुनू जज कहाँ थिकौंह । जे बाजि देवैक सैह हेतैक ।

लीलाम्बर : एहना अवस्था मे कएले की जा सकैत अछि ।

गरीब : ठीक अछि, ई पन्द्रह हजार टाका विवाह दिन हमरा ओहिठाम पहुँचब तखन दऽ देब ।

लीलाम्बर : ई एकटा रास्ता वाला बात भेलैक । लेकिन मोन राखब दलान पर पहुँचैत देरी पन्द्रह हजार टाका देमह पड़त । तकर वादे विवाहक कार्यक्रम शुरू होयत । अन्यथा वर बरियाती दलान पर सँ घुरि आयत । ओहि समय हमरा पर दोषारोपण नहि करब ।

दलाल : आब लड़को के तऽ बजाउ ।

लीलाम्बर : लड़का तऽ आवैक लेल अंगना मे धरफरान देने अछि । पहिने साठि हजार टाका, जे-से लक्ष्मी के तऽ हाथ आवह दियौक ।

दलाल : *(टाका दैत)* लियह ई रहल अहाँक साठि हजार टाकाक झोड़ा ।

लीलाम्बर : हम डालाक संग लड़का के पठा रहल छी ।

[लीलाम्बर बाबू टाकाक झोड़ा लए प्रस्थान करैत छथि - पाँछा सँ मु० सरियातीक सेहो प्रस्थान । किछु क्षणक बाद मु० सरियातीक डाला नेने प्रवेश । नियमानुसार मिथिला विध-व्यवहारक क्रिया होइत अछि । कार्यक्रम जारी रहैत अछि । लीलाम्बर बाबूक हरबरायल प्रवेश ।]

लीलाम्बर : रुकू, रुकू ओसब एखन छोड़ू, पहिने हमरा सँ निपटू । समधि कने एमहर आउ ।

दलाल : *(लऽग जाइत)* आब की भेल अहाँ कें ।

[ओहि मुद्रा मे जेना ओ बात बुझैत छथि । लीलाम्बर बाबू किछु बाजह लगैत छथि । दलाल काका रोकैत एक कात लऽ जाइत ।]

दलाल : अहाँ के कहैक काज नहिं पड़त । हम सब बात बुझि गेलहुँ ।

लीलाम्बर : की सब बात अहाँ बुझि गेलौह ।

दलाल : यैह ने एहि झोड़ा मे सिर्फ पचास हजार टाका अछि । अहाँ सँ हम कतेक मे बात केने रही ।

लीलाम्बर : पचहत्तरि हजार मे.......

दलाल : की कहलौं.......

लीलाम्बर : नहि, नहि.....पैंसठ हजार मे .....।

दलाल : *(किछु जोड़े सँ)* तऽ एहि लेल कनफुसकी करैक कोन बात अछि । पन्द्रह हजार टाका तऽ बाँकी अछिए से तऽ देबे करताह ।

गरीब : यौ लीलाम्बर बाबू, अहूँके कतेक अहल्दिल्ली होइत अछि । अद्धी-अद्धी कऽ सब टाका चुका देब ।

लीलाम्बर : फेर अहाँ बिसरि रहल छी । हमरा टाका अहाँक दलान पर पहुँचैत देरी चाही ।

गरीब : हँ-हँ, पहुँचैत देरी गोट-गोट कऽ पेमेन्ट कऽ देब ।

मु० सरियाती : जेसेकी बड़ आश्चर्य लगैत अछि । जेसेकी जखन सँ एलहुँ तखन सँ खाली टाकेक बात होइत अछि । जेसेकी एहन टाका चिन्ह तऽ कतौ देखबे नहि कएल ।

लीलाम्बर : अहाँ नहिने बुझैत छियैक । एहिसब बारे मे पहिने बात फिक्स भऽ जाइत छैक तऽ बढ़ियाँ रहैत छैक । बादक झमेला सँ तऽ निवटल रहैत अछि ।

मु० सरियाती : जेसेकी आब तऽ सब बात सुलझि ने गेल । जेसेकी आबो लड़का के तऽ बजाउ ।

लीलाम्बर : एखन असलाहा झमेला तऽ ओझराएले अछि ।

दलाल : से की यौ, आब की बाकी रहल ।

लीलाम्बर : बरियाती वाला बात तऽ एखन बाँकिये अछि ।

गरीब : हे बरियाती दस सँ पन्द्रहक बीच मे आयब । ओहि सँ

बेशी गोटाक व्यवस्था केनाइ हमरा बसक बाहर वाला बात छी । किएक तऽ पन्द्रह हजार टाका अहाँके पहुँचैत देरी चाही ।

लीलाम्बर : की दस सँ पन्द्रह ? हम कुनू एकसरा कहाँ छी । दस गोटा मे तऽ हम सब बापुतो नहि जा सकब ।

दलाल : अपनेक सब बात में ठेथ रोपैक आदत बनि गेल अछि की ? कतेक गोटा सँ एबैक ?

मु० सरियाती : जेसेकी आब ने एलहुँ हमरा बात पर । जेसेकी ओ की कहता हमरा सँ ने पूछू । कम सँ कम एकतालिस गोटा जेताह ।

लीलाम्बर : हमरा एकतालीस सँ की हैत । एकावन सँ कम मे तऽ हमरा एकदम गुनजाइसे नहि अछि । हमर अहाँ सबहक घर जकाँ फुटाएल घर नहिने अछि यौ । हमरा दसटा सरकुटुम्ब, हित-महीन आ एतेक बड़का समाज अछि ।

दलाल : जाउ इहो बात मानि गेलहुँ । एकतालिस गोटा संग वर-बरियाती अबै जायब ।

गरीब : *(उत्तेजित)* आरो कुनू बात जँ रहैक तऽ बाजिये लिअह ।

लीलाम्बर : एना तमसा किएक उठलहुँ । आब तऽ कूनू बात नहि अछि ।

मु० सरियाती : जेसेकी आबो तऽ लड़का के जल्दी बजाउ ।

लीलाम्बर : *(चिकरैत)* रामू....... रामू.......

(नेपथ्य सँ) हँ मालिक....

लीलाम्बर : समर के दलान पर पठावह ।

[धोती कुर्ता मे समरक प्रवेश । समर के सब निहारि-निहारि कऽ देखऽ लगैत अछि । समर लजाइत अछि ।]

मु० सरियाती : जेसेकी देरी नहि करिह, कार्यक्रम के आगा बढ़ावह । जेसेकी गोर लगहुन सबके ।

[समर सबके गोर लगैत अछि । गरीब धोतीक खूट सँ टाका खोलि एकावन रुपया समरक हाथ मे दैत छथि । दलाल काका सेहो टाका दैत छथिन्ह । लीलाम्बर बाबू समर के इशारा सँ एक कात मे बजबैत छथि ।]

लीलाम्बर : *(समर सँ)* ससुर कतेक टाका गोर लगाइ देलथुन्ह ।

[समर जेबी सँ टाका निकालि गनैत अछि ।]

समर : एकावन टाका । *(कहैत प्रस्थान)*

लीलाम्बर : दलाल बाबू, कने एमहर आउ ।

दलाल : *(आबि)* आब की भेल.....

(मु० सरियाती सेहो ओहिठाम आबि जाइत छथि ।)

लीलाम्बर : राम...राम....राम....लड़काक ससुर भए कऽ मात्र एकावन टाका गोरलगाइ । ई तऽ हमर नाक कटेलैथ ।

दलाल : एना सब बात पर जोड़ नहि दियौक ।

[तखनहि नेपथ्य सँ रामूक हाक—मालिक पाहुन सबके अंगना नेने आवियौन्ह । मु०सरियाती पाहुन सबके अंगना लऽ जाइत छथि]

लीलाम्बर : अहाँ हिनका सबके अंगना मे दके एमहर आउ ।

[मु०सरियाती हुनका सबहक संग प्रस्थान करैत छथि ।]

मु० सरियाती : *(प्रवेश)* जेसेकी हमरा किएक बजेलहुँ ।

लीलाम्बर : अरे गोर लगाइ एकावन टाका देलखिन्ह हें । अहाँ कने हजमा ओहिठाम सँ धोती नेने आउ ।

मु० सरियाती : जेसेकी हजमा ओहिठामक धोती हिनका सबके देबहुन ।

लीलाम्बर : तऽ की कएल जा सकैत अछि । एकावन टाका मे धोती होइत छैक । बड़ा धूर्त्त आदमी सब अछि यौ ।

मु० सरियाती : जेसेकी हम हजमा ओहिठाम सँ अबैत छी । *(कहैत प्रस्थान)*

मंच अन्हार होइत अछि

●

अंक : तृतीय

दृश्य : दोसर

[स्थान : गरीब झाक खरिहान । विवाहक दिनक दृश्य । कुर्सी-टेबुल सँ सुसज्जित अछि पूरा खरिहान । अंगना मे उथल-पुथलक आभास होइत अछि । प्रभाकर कुर्सी सबके ठीक करै मे व्यस्त अछि । तखनहि प्रभाक प्रवेश । एक दोसर सँ कनडेरिये नजरि मिलैत अछि । किछु क्षण तक एक दोसराक आँखि थमि जाइत अछि । बहराइत अछि दूनूक आँखि सँ जलक धार । प्रभा कनैत प्रभाकरक सीना सँ लागि जाइत अछि । प्रभाकर अपना आप के सम्हारैत-अंगपोछा सँ अपन नोरक संग प्रभाक नोर सेहो पोछैत अछि ।]

प्रभाकर : एहेन खुशीक अवसर पर प्रभा अहाँक आँखि मे नोर शोभा नहि दैत अछि । भगवानक लिखलाहा के कियो मिटा सकैत अछि ? हमरा कपार मे अहाँ सनक सुशील कन्या नहि लिखल छल ।

प्रभा : कपार तऽ हमर खराब अछिए । जिनगी भरिक सजाओल सपना, नास्तिकक रूप धारण कय लेलक हें । जानि नहि ओहि जन्म कोन ककर अपराध कएने छलहुँ ।

प्रभाकर : अपराध नहि प्रभा, परोपकार कहिऔ । ओहि जनमक जैं नीक बनाएल छल, तैं हमरा सनक पुरुषक संग नहि भेल । कहबी छैक ''कतह राजा भोज आ कतह भोजबा तेली'' ।

प्रभा : हम तऽ ओहि तेंलिये के सब किछु मानि चुकल छलहुँ ।

प्रभाकर : प्रभा आब हमरा बारे मे सोचनाइ एकदम गलत छी । आखिर ओ हमर संगी छी प्रभा । एहना हालत मे हम कए की सकैत छी । फेर ओकरा मे की कमी छैक । ओ तऽ सर्वगुणी अछि ।

गुणानन्द : *(प्रवेश, आश्चर्य)* अहाँ सब एहिठाम की कए रहल छी । *(प्रभा सँ)* बुच्ची अंगना दिस जाउ, एखन बाहर एनाइ ठीक नहि । *(प्रभाकर सँ)* कने लाइट लए कऽ आँगा देखियौक - बरियातीक टायर बोनही पोखरि लग फँसि गेल हें ।

[प्रभाकर लाइट उतारय लगैत अछि - तखनहि बरियाती सबहक प्रवेश होइत अछि । अंगना मे विवाहक गीत, बरियातीक स्वागत गीतक रिकार्डिंग चलैत अछि । बरियाती सबके पैर धोइक व्यवस्था अछि । किछु बरियाती बिन पैर धोनहिये बैसि जाइत छथि । ताहि पर गौआँ लोकक संग आलोचना होइत अछि । जकर जबाब मुख्य बरियाती अपना मन सँ दैत छथिन्ह । शुरू होइत अछि मिथिला विधानक अनुसार स्वागतक कार्यक्रम । कार्यक्रम किछु काल चलैत अछि । अकक्ष भऽ गेला पर लोकक भीड़ सँ लूटन काका उठि आगाँ बढ़ैत मंच पर आबैत छथि ।]

लूटन : आरो कुनू व्यवस्था छऽ की एतबे तक हौ ?

मुख्य बरियाती : जेसेकी लियह, हम एखन सँ यैह सोचि रहल छलहुँ । जेसेकी ई कतौ बर्दास्त करै वाला बात छैक । जेसेकी कुटुम्ब अहाँ तऽ हमर मुँहक बात छिनि लेलहुँ ।

विद्यार्थी : *(गुलाबजल छिटैत)* एखनहि किएक अकक्ष लागि गेल । एखन तऽ स्वागतक शुरुवाते भेलैक । एखन तऽ अनेक एटम बाँकी छैक ।

मु० बरियाती : जेसेकी काँटो-कुशाक ऐटम छैक की ?

विद्यार्थी : *(आश्चर्य)* काँट-कुशक ? अहाँक बात हम नहि बुझि सकलहुँ अंकल जी ।

मु० बरियाती : जेसेकी वैह लियह । जेसेकी एखन तक अहाँ काँट-कुशक अर्थ नहि बुझैत छियैक विद्यार्थी ।

विद्यार्थी : स्वागत मे काँट-कुश तऽ कोनो केमिकल नहि होइत छैक यौ अंकल जी ।

मु० बरियाती : जेसेकी मारु गोली एहि स्वागत के विद्यार्थी । जेसेकी कहावत जे छैक ''पेट मे खड़ नहि आ सिंग मे तेल'' । जेसेकी एखनहुँ बुझलियैक की नहि यौ विद्यार्थी ।

विद्यार्थी : नहि बुझलियैक औजी, अंकल जी ।

मु० बरियाती : जेसेकी माँछोक व्यवस्था अछि की ?

विद्यार्थी : किएक ! अहाँके एखनहि भूख लागि गेल ।

मु० बरियाती : जेसेकी अजीब बात करैत छी अहाँ विद्यार्थी ।

विद्यार्थी : हमर कहब अछि गाम पर सँ भुखले एलहुँ ।

मु० बरियाती : जेसेकी गाम पर जँ खाए लेने रहितौं तऽ एतह की नाच देखैक लेल एलहुँ । खाएक लेल ने बरियाती एलहुँ । *(बात बढ़बैत)* हे अहाँ जाउ हम ओहि कुटुम सँ बात करैत छी । *(लूटन तरफ इशारा)*

लूटन : की औ, विद्यार्थी सँ नहि सकलहुँ की कुटुम ?

मु० बरियाती : जेसेकी सकै वला बात नहि छैक । जेसेकी विद्यार्थी तऽ एखन तक काँट-कुशाक अर्थ नहि बुझैत छथि ।

लूटन : छोरु.....छोरु.....। छोरु एहि सब बातकें । एहन शुभ घड़ी मे एहि सभ बातक कियो चर्च करए ।

मु० बरियाती : जेसेकी की बजलहुँ कुटुम । जेसेकी माँछक व्यवस्था नहि नेतऽ अछि ।

लूटन : कुटुम की बजैत छी, ई बात सब । माँछ-मांस.... मैथिलक बरियाती मे तऽ.....

मु० बरियाती : जेसेकी की कहलहुँ । जेसेकी जामे तक मैथिलक बरियाती मे माछ-मांस आ रसगुल्ला जमि कऽ नहि भेलैक - जेसेकी ओहो बरियाती गेनाइ की बरियातिये गेनाइ भेलैक यौ । जेसेकी देखू अगर ओकर व्यवस्था नहि हैत तऽ हम एखन एहि ठाम सँ चलि जाएब । किएक तऽ बरियाती हम सिर्फ माछ-मांसक लोभ सँ जाइत छी ।

लूटन : अगर व्यवस्था नहि भेलैक तऽ कुटुम.....

मु० बरियाती : जेसेकी हम नहि रूकब यौ कुटुम.....

लूटन : ई अहाँक दोष नहि अछि । एहि गामक धर्म छैक । मतलब एहिठाम एखन तक जतेक ठाम सँ बरियाती एलैक सब ठाम सँ एकटा बरियाती रुसि कऽ पराइत छथि । हमरा लगैत अछि एहि दलान परसँ रुसि कऽ पराइक अहींक नम्बर छी ।

मु० बरियाती : *(उठैत उत्तेजित)* जेसेकी हमरा अहाँ ई बात कहब औ । जेसेकी हमरा अहाँ एना कऽ बेज्जती करब । आब हम एतह एक पल नहि रूकब ।

[जाइक उपक्रम । सब रोकैत अछि । मुदा नहि रुकैत छथि। प्रस्थान केलाक किछु पल बितलाक बाद जीवेश हुनका ढकेलैत मंच पर अनैत अछि ।]

जीवेश : अहाँ नीचेन भए कऽ बैसू । अहाँ के कियो एखन सँ किछु नहि कहत । आब हम अहाँ सब सँ एकटा प्रश्न पूछैत छी, जँ एकर सही-सही जबाब दै जायब तँ माँछक कुटिया नहि तऽ झोड़ो-झाड़ खेबे करब । जँ उत्तर नहि देलहुँ......

मु० बरियाती : तऽ हम सब एखन सँ किछु नहि बाजब....

जीवेश : तऽ सवाल अछि—एक आ एक के कोना कऽ जोड़ल जाएत जे दू सँ अधिक भऽ जायत ।

[कनेक काल सन्नाटा छा जाइत अछि । मु० बरियातीक मुँह पर भारी उदासीनता छा जाइत अछि ।]

द्वितीय बरियाती : कने तूहीं कहऽ तऽ एक-एक के जोड़ला सँ दू सँ अधिक कोना भए जाएत । *(हाथ पर जोड़ि हास्य करैत अछि ।)*

जीवेश : अहाँ सब हारि मानि गेलहुँ ।

तृतीय बरियाती : हँ-हँ, हम सब हारि मानि गेलहुँ । तूहीं कने जल्दी बतावह - बड़ा आश्चर्यजनक प्रश्न अछि ।

[किछु अलग तरहे जोड़ि हास्य करैत अछि ।]

जीवेश : तऽ सुनू एक-एक के जोड़ला सँ दू सँ अधिक भए नहि सकैत अछि ? होइत अछि । कोनो आश्चर्यक बात नहि छैक। एकटा लड़का आ एकटा लड़की के जोड़ि माने विवाह करा कऽ दू सँ अधिक बनाएल जा सकैत अछि ।

[सब ठहाका मारि हँसैत अछि । हँसीक बीच मे गुणानन्द बाबू आज्ञाक डाला लए प्रवेश करैत छथि । लीलाम्बर बाबूक लऽग जाइत छथि । लीलाम्बर बाबूक तामसी रूप प्रकट होइत अछि ।]

लीलाम्बर : ई कोन चीज थीक ।

गुणानन्द : प्रथमहि बरियाती एलहुँ नेकी । ई आज्ञा डाला थीक । जे कपड़ा लत्ता गहना-गुड़िया अनलियैक से दए दियौक। एकर दोसर अर्थ होइत अछि लड़का के उठैक आज्ञा दियौक । अहाँक आज्ञाक बादे विवाहक विध-व्यवहार शुरू हैत ।

लीलाम्बर : अपन ई रामायण आ महाभारतक सिरियल के बन्न कए जल्दी सँ गरीब बाबू कें दरवज्जा पर बजाउ ।

गुणानन्द : ओ कत्तहु काज सँ गेल छथि । हुनका आवह मे समय लागत । फेर अहाँ छी छन्दोगिया । छन्दोग मे दू बेर विवाह होइत छैक - भिनसर भए जायत । लड़का के तामे अंगना जाइक आदेश देल जाय ।

लीलाम्बर : कोनो आदेश तखन तक नहि देब - जामे हुनका सँ भेंट नहि भऽ जाइत अछि । हुनका संग हमरा बात किछु भेल छल - परञ्च एतह किछु दोसरे बात भऽ रहल अछि ।

[तखनहि लाल धोती, नव गंजी या गोलगला पहिरने गरीब झाक प्रवेश होइत अछि ।]

गरीब : की भेल एखन तक ओझाजीके अंगना नहि लगेलहुँ । आब तऽ देरी भऽ रहल अछि ।

गुणानन्द : कोन तरहक समधि अहाँ कएलहुँ ओ तऽ ककरो बाते नहि सुनैत छथि ।

गरीब : *(लीलाम्बर सँ)* समधि ओझा जी के अंगना जाए ने दियौन ।

लीलाम्बर : बन्न करु ई अपन मोहनी-मंत्र । जे बात भेल छल ताहि पर आउ ।

गरीब : ओहिक व्यवस्था मे एखनो गेल छलहुँ समधि । टाकाक व्यवस्था नहि भए सकल । की कऽ सकैत छी । दोसराक हाथ सँ अपना हाथ टाका बड़ा कठिनता सँ आबैत छैक।

लीलाम्बर : की कहलौं, टाकाक व्यवस्था नहि भऽ सकल । जे बात हम बजैत छी ओकरा पूरा करैत छी । हम तऽ पहिनैये कहि देने रही कन्यादान अगिला शुद्ध मे कऽ लेब । अहाँ

जोड़ देलहुँ एहिए शुद्ध मे करब सेहो हम मानि गेलहुँ । अहाँ हमरा दलान पर अपना मुँह सँ बाजल रही जे दलान पर पहुँचैत देरी पन्द्रह हजार टाका चुकती कए देब। परन्च धूप-दीप, आरती सब बीत गेल । आज्ञा-डाला तक आबि गेल - मगर अहाँक दर्शन द्वितीयाक चान भऽ गेल ।

गरीब : हम अहाँकि वचन दैत छी, हमरा जतेक जल्दी भए जायत - ई सब टाका अहाँ के दए देब । एकटा मौका देल जाए हमरा ।

लीलाम्बर : एकटा बात साफ तरहे सुनि लिअह, जँ टाका एखन चुकती नहि करब तऽ जे बात कतहुँ नहि भेल छल से बात अहाँक दरवज्जा पर भए जाएत - वर-बरियाती घुरि कऽ चलि जायत ।

गरीब : एना जुनि बाजू ई बात सब । ई बात सब बजिते छी ताही मे हमरा माथा पर कलंकक टीका लगैत अछि । जँ ई बात भऽ जाएत तऽ हम कतहुँ के नहि रहि जायब ।

लीलाम्बर : अहाँ कतहुँ के रही वा नहि रही ओहि सब बात सँ हमरा कोनो मतलब नहि अछि । अन्तिम बेर कहि रहल छी, जँ टाका एखन पेड करब तखन तऽ रुकब, नहि तऽ बेकार राति बेसी भेल जा रहल अछि ।

[प्रभाकरक हरबराएल प्रवेश होइत अछि ।]

प्रभाकर : प्रभाक मायकें हर्ट स्ट्रॉक भए गेलन्हि । जल्दी अंगना चलू ।

[गरीब आ गुणानन्द हरबरा कऽ आंगन दिस जाइत छथि । पाँछा सँ प्रभाकर सेहो । किछु समयक बाद एकटा खाट पर

प्रभाक माय़ के टाँगि कऽ बरियातीक आगा दए लए जाइत अछि । खाटक एक छोड़ प्रभाकर एवं दोसर छोड़ गुणानन्द बाबू पकरने छथि । पाँछा सँ गरीब झा आबि मंच पर स्थिर भए जाइत छथि । कनेकालक लेल एक बेर फेर सन्नाटा छा जाइत अछि ।]

गरीब : समधि आब बेशी जिद्द जुनि करू । अहाँ जे...बजलियैक हम सब घुड़ि कऽ चलि जायब, से सुनि प्रभाक मायक माथा फाटि गेलनि ।

लीलाम्बर : ई सबटा नाटक छी । हम एहि नाटक मे नहि परह चाहैत छी । ई सबटा अहाँ सबहक पूर्व निर्धारित योजना अछि। परन्च हमरा ठगि लेब असम्भव । *(बेटाक गट्टा पकरि उठवैत)* चलू एहिठाम रुकनाइ ठीक नहि ।

गरीब : *(पैर पर खसैत)* लीलाम्बर बाबू एहन अनर्थ जुनि करू । हमर सब प्रतिष्ठा माटि मे मेट जाएत । टाका तऽ जिनगी मे कतेक अबैत जाइत छैक । परञ्च माथ पर लागल कलंक कहियो नहि मिटाइत छैक । अहाँक टाका हम तीन सँ चारि दिन मे कोनो ने कोनो व्यवस्था कए दए देब ।

लीलाम्बर : *(पैर सँ ठुकराबैत)* हम एखन कोनोटा बात नहि सुनि सकैत छी । हम जतबहि बाजैत छी ओतबहि करैत छी । *(आँगा बढ़ि जाइत छथि ।)*

[तखनहि मुखियाजीक प्रवेश, गरीब झा मुखियाजीक पैर पर खसि पड़ैत छथि ।]

गरीब : मुखिया जी कतहुँ सँ हमरा पन्द्रह हजार टाकाक ओरियान कए दियह । हम अहाँक ई उपकार जिनगी भरि नहि बिसरब ।

मुखियाजी : *(आगाँ बढ़ि)* खसलाहा तरक खेत लिखैक काल मे लुटन काका । आ टाका मांगैक काल हमरा सँ । टाका माँगैत हमरा सँ लाज नहि होइत छह । जँ आइ ओ खेत हमरा लिख देने रहितह तहन तऽ जतेक टाकाक काज रहितह हम दितिअह । ओहि बारह कट्ठाक कारने हमर प्लाउट नष्ट भए गेल ।

[लीलाम्बर बाबू आगाँ बढ़ऽ लगैत छथि । गरीब झा पैर छानि लैत छन्हि । परंच अभेलना करैत धकेलैत आगाँ बढ़ि जाइत छथि । तखनहिं प्रभा अर्द्ध नेपथ्य सँ 'रुकि जाउ'....प्रभा के स्त्रीगण पकरैत रहैत अछि । सबके झमारैत सजल वर-बरियातीक बीच आबि जाइत अछि । जे जतह रहैत अछि ओतहि ठाम भऽ जाइत अछि । प्रभा लीलाम्बर बाबूक समीप जाइत अछि ।]

प्रभा : मात्र पन्द्रह हजार टाकाक कारने, अहाँ हमर बापक सपना के तोरि जा रहल छी । मात्र पन्द्रह हजार टाकाक कारने हमर विवाह नहि होयत । एखन हमर मूल्य अहाँक नजरि मे पन्द्रहो हजार सँ कम अछि । की सोचि कऽ अहाँ हमरा दलान पर सँ आपस जा रहल छी जे हमर विवाह आब दोसरो ठाम कतौ नहि हैत । हम अहाँक की बिगाड़लहुँ जे ई कलंक हमरा माथा पर लगबैत छी । यैह कसूर हमर अछि ने जे बेटी भए गरीब घर मे हमर जन्म भेल । कोन अहाँक एहन अपराध केलहुँ जकर डंड हमरा देने जा रहल छी । *(गुणानन्द बाबूक प्रवेश । एहिये बीच मे प्रभा समर सँ)* आ अहाँ.....बाहरे बापक आज्ञाकारी बेटा, मिथिलाक सुन्नर वर । अहाँ सँ कखनहुँ कठपुतली नीक जे कम सँ कम मूक भेलाक बादो तमाशा समय मे

धोखा नहि दैत अछि । टाकाक कारने अहाँ हमरा संग विवाह नहि करब । कोन गुण मे हम अहाँ सँ कम छी । अहाँ बी०ए० पास केलहुँ तऽ पचहत्तरि हजार टाका दाम भए गेल । आ एकटा लड़की आइ०ए० पास केलक तऽ कोनो दाम नहि । ने अहाँ सँ हम योग्यता मे कम छी । ने अहाँ सँ लम्बा-चौड़ा कम छी आ ने अहाँ सँ सुन्दरते मे कम छी । फेर हमरे किएक नहि दाम हैत । एकटा बात कान खोलिकऽ सुनि लियह - अहाँ की हमरा संग विवाह नहि करब, आब हमहीं अहाँक संग विवाह नहि करब, अहाँ हमरा योग्य नहि छी । I hate you....you may go. *(पागलपनक तरह लीलाम्बर सँ)* एखन हमरा दलान पर सँ चलि जाइ जाउ । अहाँक बेटाक संग हम विवाह नहि करब । अहाँक बेटा हमर पति होइक योग्य नहि छथि । जल्दी चलि जाउ एहिठाम सँ । किएक ठाढ़ छी, राति बेशी भए गेल, देरी होइत अछि । अहाँक बेटा हमर की रक्षा कऽ सकैत छथि । दू टा समाजक लोकक बीच हमर बापक, हमर खानदानक, संग-संग स्त्री समाजक अपमान भेल । जकर सम्मानक डोर एहि कठपुतली सँ बाँधल छल । जे युवक मान-सम्मानक रक्षा नहि कऽ सकल ओ की हमर पति भऽकऽ रक्षा करत । जाउ एतह सँ जल्दी जाइ जाउ.......***(प्रभा कें गुणानन्द बाबू सम्हारैत छथि । गरीब झा एक थापर मारैत छथि ।)***

लीलाम्बर : राम.....राम.....राम.....छि...छि...एहन पाँज सँ बाहर बेटी । जकर विवाह होइतैक से लड़की कतहुँ वर-बरियातीक बीच आवे ।

[प्रभा के लऽकऽ गुणानन्द बाबू जाइ लगैत छथि । तखनहि समर !]

समर : रुकू....हम अहाँक संग विवाह करब । जँ अहाँ विवाहक लेल तैयार होइ । *(गुणानन्द बाबू रुकैत छथि ।)*

लीलाम्बर : *(समर सँ)* ठार की छह चलह ने ।

समर : बाबूजी जाउ अहाँ सब । एखन आब हमर एतह सँ जाइक कुनू प्रश्ने नहि अछि ।

लीलाम्बर : की बजलऽ....... ?

समर : हाँ बाबूजी, एखनहि-एखनहि हमर मनःस्थिति किछु दोसरे तरहक भए गेल । हम आब एतह सँ बिन विआहल नहि जायब । जँ हमर एहि कदम सँ स्वस्थ रही तऽ रहू नहि तऽ जा सकैत छी ।

लीलाम्बर : की बजलह ओहि लड़कीक संग विवाह करमा जे भरल वर-बरियाती आ समाजक बीच मे आबि ड्रामा केलक । ओ लड़की आब हमर पुतहु हैत ई बात आब कदापि नहि भऽ सकैत अछि । एहि कातक सूर्योदय ओहिकात भए सकैत अछि परञ्च ई बात असम्भव, बहुत असम्भव अछि ।

समर : बाबूजी सूर्य-चन्द्रमा के धमकी दए कऽ हमरा अपना निर्णय सँ अस्थिर जुनि बनाउ । हमर ई अन्तिम निर्णय थीक - आब हमरा विवाह करै सँ कियो नहि रोकि सकैत अछि । जाहि कन्या के अहाँ खराब नजरि सँ देखैत छियैक ओ कोन खराब कदम उठेलक हें । मात्र पन्द्रह हजार टाकाक कारने एकटा बेटीक बापक मान सम्मान के तौलि लेलियैक । एकटा नारीक अपमान केलियैक ओ जँ अपन शक्ति देखेबें केलक तऽ कोन भारी बात

केलक। बहुत दिन तक घोघ तर से नुकाएल आब साइद ई परिवर्तनक नजर छी । लड़का जँ लांगड़-लुल्ह, कान्ह कोतर किछु हुए तऽ ओ मूल्यवान भऽ गेल । मगर ओतहि लड़की सर्वगुणी, सर्वसुन्नरि आ सर्वोपरि हुए तऽ ओकर कोनो महत्त्व नहि ।

प्रभा : *(खूट सँ सेनुर खोलैत)* भ्रम टूटि गेल ने । लियह एहि खूट सँ चुटकी भरि सेनुर आ भरि दियहु एहि भरल समाजक बीच मे हमर मांग के - तोरि दियौक एकटा समाजक कुरीति कें आ बदलि दिअह समाज के ।

[समर सेनुर लेमह लगैत अछि । लीलाम्बर बाबू सेनुर मे झापर मारि खसा दैत छथि । आ समर कें खींचह लगैत छथि - समर विरोध करैत अछि । लीलाम्बर बाबू अपसियात भेलाक बाद किछु थकान महसूस करैत छथि ।]

लीलाम्बर : *(बरियाती सँ)* अहाँ सब की मुँह तकैत छी । पकड़ि कऽ जल्दी लऽ चलू ने एकरा ।

[मुख्य बरियाती सेहो समर के भरि पाँज पकरैत छथि ।]

मु० बरियाती : जेसेकी जानि नहि आइ ककर मुँह देखि कऽ उठलहुँ । आएल छलहुँ छागर पाठीक मांस खाइक लेल जेसेकी एतह तऽ मनुक्खक मांस बनैक लेल तैयार अछि ।

[मुख्य बरियाती भरि पाँज मे खिचैत एक भाग मे समर कैं तऽ दोसर भाग प्रभा के खींचैत छथि गुणानन्द बाबू । प्रकाश जाइत अछि सुन्न वेदी तर - समर ई कहैत प्रस्थान करैत अछि - हम आबि रहल छी प्रभा जी....हम अहींक संग विवाह करब ।]

मंच अन्हार होइत अछि ।

●

अंक : तृतीय
दृश्य : तेसर

[स्थान : गरीब झाक सुन्न खरिहान । पिछला दृश्यक सेट । वर-वरियाती गेलाक तुरन्त बादक समय । गरीब झा माथ पर हाथ लय बैसल छथि । नेपथ्य सँ स्त्रीगण सबहक कुचरि-कुचरि कऽ बजवाक आवाज ।]

प्रथम : आब की हेतन्हि, माथ पर तऽ कलंकक टीका लागि गेलन्हि ।

दोसर : ई कलंकक टीका कहियो नहि मिटा सकैत छन्हि ।

तेसर : हेएयै प्रभा के घमंडो बड़ भए गेल छलैक । होइत छलैक कॉलेज चलि जायब तऽ डाक्टरे-इंजिनयर सँ विआह हैत ।

प्रथम : आब घर बैसल रहौथ ने । आब तऽ घर सँ निकलियो नहि सकैत छथि । कोन मुँह लोक के देखोथिन्ह ।

दोसर : एहन बानसब्बर बेटी ! ऐयै एकोरती लाज-धाखक बात रखलकैक । सरसराएल वर-वरियातीक बीच मे चलि गेल ।

तेसर : आब रहऽ ने भरिजन्म कुमारि बैसल । आब के करतन्हि एहन उचरीन बेटीक संग विआह । बढ़िऐं भेलैक, लगैत छल राजा-महराजाक बेटी छी, तेहने स्टेण्डरी भेने छल ।

गरीब झा : जखन कपार जड़ै छैक तऽ ई अचरी-पचरी सुनैये पड़ैत छैक ।

[गुणानंद बाबूक प्रवेश । गरीब झाक हाथ माथ पर सँ उतारै छथि ।]

गुणानंद : धुर बकलेल.....कोनो उदास नहि होइक बात छैक । थाना मे लीलाम्बर बाबू आ दलाल बाबूक नामे डायरी लिखा देलियैक । पुलिस ओकरा सबके पकड़ैक लेल गेलहैं । जे

भगवान करैत छथिन्ह बढ़िये करैत छथिन्ह । अहाँक जेठका जमाइक छोटका भाइक की नाम छियैक जे हमरा संग अस्पताल गेल छल ।

गरीब : प्रभाकर........।

गुणानंद : हँ ओ प्रभाकर आ प्रभा एक दोसर के बहुत दिन पहिने सँ चाहैत अछि । ईबात एखन ओ अस्पताल मे कानि-कानि कऽ कहलक हें । डर सँ ओ ई बात मुँह सँ नहि निकालि सकल । हमर विचार अछि ओकरे संग प्रभाक विवाह सम्पन्न कए लेल जाए ।

गरीब : ओकर गार्जन के बिना कहने.......।

गुणानंद : प्रभाकर पूर्ण रूप सँ तैयार अछि । प्रभा सेहो ओकरा चाहैत छैक । एहिबातक आभास हमरा पहिने छल—किएक तऽ आइयो बरियाती आवह सँ किछु पहिने प्रभा आ प्रभाकरक बीच बात होइत छल । प्रभा कनैत छल प्रभाकर ओकर नोर पोछैत ओकरा बिसरि जाइक लेल कहैत छलैक। फेर एखुनका जे स्थिति आएल अछि एहना स्थिति मे कियो खराब नहि कहत ।

[तखनहि जीवेशक हरबरायल प्रवेश ।]

जीवेश : बाबू छी यौ, जल्दी सँ अंगना चलू ।

गरीब : एतेक हरबराएल किएक छह ।

जीवेश : जल्दी सँ अंगना चलू ने, प्रभा दीदी घर बन्न कए लेने अछि । केवाड़ नहि खोलैत अछि ।

[तीनू गोटाक हड़बरायल नेपथ्य दिश प्रस्थान । किछु क्षण मंच सँ प्रकाश विलीन होइत अछि । दृश्य परिवर्तन होइत अछि । धीरे-धीरे प्रकाश पड़ैत अछि—प्रभा साड़ी के गड़दनि मे बाँधि कोड़ो मे बाँधि रहल अछि । तखनहि नेपथ्य मे केवार मे धक्का

दय प्रभा के खोलैक लेल कहैत अछि । नहि खोललाक बाद प्रभाकर केवाड़ तोरैत प्रभाक समीप पहुँचैत अछि । ओकर साड़ी छोड़वऽ लगैत अछि । प्रभा पागलपन मे विरोध करैत अछि ।]

प्रभा : छोड़ि दिअह हमरा । मरि जाय दिअह हमरा । बेटीक नाम पर जँ हम कलंक छी तऽ नहि जीवह चाहैत छी हम । नहि जीवह चाहैत छी । *(ससरी फेर लगवऽ लगैत अछि)* ।

प्रभाकर : *(डँटैत)* प्रभा............... ।

[किछु क्षण शान्त आ स्तब्ध रहैत अछि ।]

प्रभाकर : पागलि भऽ गेलहुँ अहाँ । ई घटना जे एखन अहाँक संग घटल की अहाँक संग अन्याय भेल आ हमरा संग न्याय । हाँ प्रभा एकटा निःसहाय बेटीक बापक प्रति ई समाजक कुरीति आ ओ अदृश्य भगवान अन्याय केलक । मगर हमरा अहाँक बीच न्याय भेल । आइ हम चिकरि-चिकरि कहि सकैत छी—हमर प्रेमक विजय भेल । सरिपहुँ प्रभा हम अहाँ बिनु एक क्षण, एक पल नहि जीव सकैत छी । मुँह चुप रखलहुँ बस अहाँ माय-बापक मान-सम्मान रखैक वास्ते । संग-संग अहाँक खुशीक वास्ते ।

प्रभा : नहि, आब हम विवाह नहि करए चाहैत छी । हम कलंकिनी छी । ई मुँह एहि समाज के हम नहि देखवह चाहैत छी—जे समाज हमर बापक खुशी के छीन लेलक ओहि समाज मे हम नहि रहऽ चाहैत छी ।

प्रभाकर : अहाँक एकटा बात हम नहि मानब आइ । हमर विवाह अहाँक संग होएत सेहो आइ, एखन आ ओही वेदी तर जाहि वेदी तर सँ वर-बरियाती भूरि कऽ गेल हें ।

[तखनहि गरीब, गुणानन्द आ जीवेशक प्रवेश—गरीब झा के देखिते प्रभा बाबू कहैत गला सँ लागि जाइत अछि आ जोर-जोर सँ कानह लगैत अछि—गरीब झा सेहो कानह लगैत छथि ।]

गुणानंद : *(छोड़वैत)* फेर ई कोन ताल शुरू केलहुँ । एना किएक करैत जाइत छी । जाउ पंडितजी के बजेने आउ । *(प्रभाकर सँ)* की यौ विद्यार्थी अपने तैयार छियैक ने विवाहक लेल ।

प्रभाकर : तैयारे टा नहि छियैक, पूर्ण रूपे तैयार छी ।

गुणानंद : *(गरीब सँ)* बेकार कें राति बीत रहल अछि पंडितजी कें जल्दी बजाउ ने ।

[गरीब झाक प्रस्थान, प्रभा आ प्रभाकर गुणानंद बाबूक दून्नू कान्ह पर अपन-अपन माथ अँटका दैत अछि । गुणानंद बाबू अपना हाथ सँ दून्नू गोटेक माथ कें छूवैत छथि]

मंच अन्हार होइत अछि

●

अंक : तृतीय

दृश्य : चारिम

[स्थान : गरीब झाक अंगना । पूर्ण रूपे मिथिला विधानक अनुसारे विवाह सामग्री परिलक्षित अछि जेना बेदी, उखरि-समाठ, धानक लावा इत्यादि । प्रभा आ प्रभाकर बर-कनियाँक रूपे सजल बैसल अछि । पंडितजी विवाहक कार्यक्रम आगाँ बढ़वैत लावा छिरिआयल जाइत अछि । मंच पर प्रकाश परैत अछि । जीवेश प्रभाक हाथ मे लावा दैत रहैत अछि । तखनहि हतासल समरक प्रवेश । ई दृश्य देखि ओकर हतास उरि जाइत अछि । ओकरा मोन पड़ैत छैक पुरना बात ।]

[नेपथ्य सँ नाटकक दोसर अंकक पहिल दृश्यक संवाद जे प्रभाकर आ समरक बीच भेल अछि से सुनाएल जाइत अछि ।) समर एक

कात चलि जाइत अछि । जतह ओकरा कियो नहि देखैत अछि । समरक आँखि मे नोर डब-डबा जाइत अछि आ ओ एना लागि रहल अछि जेना ओकरा सँ कियो किछु हाथ मचोरि छीन लेने होइ । तखनहि दरोगा बाबू, लीलाम्बर बाबू आ दलाल काका के हथकरी हाथ मे पहिरौने अनैत अछि । दूनू गोटाक गड़दनि मे जूता-चप्पलक माला अछि एवं हुनका पाँछा ग्रामीण जनता । दूनू आदमी प्रवेशक संग गरीब झाक पैर पर खसि परैत छथि । ग्रामीण सभ लीलाम्बर आ दलाल काका कें मारैक लेल टुटैत अछि । एहि बीच विवाहक कार्यक्रम समाप्त होइत अछि । प्रभाकर ई दृश्य देखि छोड़वैक लेल जाइत अछि । हुनकर धोतीक संग प्रभाक साड़ीक खूँट बाँधल अछि । जाहि कारने प्रभा सेहो जाइ लगैत अछि । एकटा हास्यास्पद अभिनय होइत अछि ।]

प्रभाकर : *(पहुँचैत तेज स्वर)* बंद करू ई नाटक । आब मारि के की होएत । एकटा दलाल काका आ लीलाम्बर बाबू के मारि के की भेटत । हिनका सब सनहक हजारो आदमी एहि समाज मे अछि आ एहि समाज के दूषित केने अछि आ हुनका सबके ई समाज खूब मान्यता देने अछि । एखनो समय अछि—एखनहुँ जागू आ खत्म करु विवाह मे "टाकाक मोल" के । पल्टू पुरना रीत के ! जोड़ू समाज सँ नवयुवक आ नवयुवतीक प्रीत के । हमर समाजक अधिकांश लोक विवाहक मोल नहि दए दहेज रूपी टाकाक मोल दैत छथिन्ह । बदलू अहि आन्हर समाज के । पकड़ा दियौक ई डोर नवयुवक आ नवयुवती के । छोड़ि दियौक ओकरा पूर्ण रूप सँ मनपसन्द जीवन संगी चुनैक लेल । ई एकटा जिनगीक फैसला होइत छैक—जकर स्वयं सँ नीक फैसला कियो नहि कऽ सकैत अछि । तखनहि टा विवाह शब्द के स्वतंत्र कए "टाकाक मोल" के एहि रीत सँ अलग कए खतम कैल जा सकैत अछि । एहि तरहे एहि प्रथा सँ छुटकारा पाएल जा सकैत अछि ।

दरोगा : आब कहू गुणानंद बाबू की काएल जाए हिनका सबके ।

गुणानंद : की काएल जायत. जतेक टाका लेने छथिन्ह से आपस कऽ देथुन्ह । इहो सब तऽ एहिये समाजक रहनिहार छियथि । एहिबेर माफ कऽ देल जानि । आगा सँ एहि तरहक बात सँ परहेज राखैथ ।

समर : *(आक्रोशित)* नहि, ई अन्याय होएत एहि समाजक संग, ई अन्याय होएत एकटा निःसहाय बेटीक बापक संग, नारी जातिक इज्जतक संग जे हिनका सब सनक भ्रष्ट आदमी के कियो माफ करत । दरोगा बाबू, एकटा ओ बेटा जकर जिनगी बाप खराब कऽ देलक । ओकर खुशीक घर मे आगि लगा देलक टाकाक कारने । ओ बेटा आइ साफ तरहे कहैत अछि एहि तरहक बाप के फाँसी पर चढ़ा देल जाए ।

गरीब झा : दरोगा बाबू, ई सब फैसला हम नहि करब । एकर फैसला कोर्ट करत । हमरा एहिठाम एखन शुभ-घड़ी अछि । एखन एतह सँ हिनका सबके लए जाउ ।

[दरोगा बाबू फेर हुनका सभ के लए जाइत छथि । ग्रामीण सेहो ओकर पाँछा पिक्की दैत प्रस्थान करैत अछि । गरीब आ गुणानंद सेहो प्रस्थान करैत छथि । प्रभा, प्रभाकर एवं समर रहैत छथि ।]

प्रभाकर : समर, हम अहाँक संग बहुत बड़का अन्याय केलहुँ, ई बात हम बुझैत छियैक, मगर अहाँ आवह मे बहुत देरी कए देलहुँ । अहाँ के स्मरण होयत कहने रही लड़कीक

संग हमर प्रेम चलैत अछि येएह ओ हमर खुशी छी । अहाँक संग जखन विवाह ठीक भेल तखन हम मुँह चुप रखलहुँ । लेकिन एखुनका स्थिति के देखि ईसब करए परल । ताहि लेल क्षमा चाहैत छी ।

समर : नहि प्रभाकर, अहाँ बहुत बड़का कार्य केलहुँ । ई बूझू तऽ हमरा पर एकटा उपकार केलहुँ । फेर ईतऽ प्रेमक विजय भेल जे सदियो सँ होइत आयल अछि । बेस तऽ एखन जाइत छी हम *(जाइत, फेर घूरि)* प्रभा जी भऽ सकए तऽ हमरा माफ कऽ देब । हम अहाँक नजरि मे कसुरवार छी । परन्च प्रभाजी हम निर्दोष छी । हमर कुनू दोष नहि अछि । *(कहैत विचित्र ढंगे प्रस्थान । एकटा क्रन्दनीय स्थिति ।)*

[प्रभा आ प्रभाकर अभिनय रूपे एक दोसरक आमना-सामना अवैत अछि । किछु क्षण देखलाक बाद एक दोसरक नाम लैत गला सँ गला लागि जाइत अछि । तखनहि जीवेश बीच मे आवि : हौ सार पहिने फीस निकालह । तालीक गड़गड़ाहट संग प्रकाश धीमा होइत बन्न भए जाइत अछि ।]

पटाक्षेप

॥ समाप्त ॥

पत्राचारक पता

आनन्द कुमार झा
C/o श्री अभय कान्त झा
बैंक आफ बड़ौदा
4, ब्रैबर्न रोड, कलकत्ता-700 001
(एहिठाम सँ पोथी सेहो संग्रह कएल जा सकैछ)

पोथी प्राप्त करबाक पता

श्री कालीकान्त झा
पूरब अपार्टमेन्ट
42, रिज रोड, मालबार हिल
वाकेश्वर, मुम्बई-6

आर. के. स्टेशनरी
शर्मा मार्केट
सेक्टर-5, नोयडा
फोन : 91-4538541

श्री त्रिलोककुमार झा
ग्रा० पो० मेंहथ,
झंझारपुर

श्री अभयकान्त झा
13/16-B, विशेश्वर बनर्जी लेन
कदमतल्ला, हावड़ा-1

श्री सीतानन्द झा
एम ब्लाक
संगम विहार, नई दिल्ली

मिथिला बुक्स एण्ड स्टेशनरी
अनुमंडल रोड, झंझारपुर
एल. एन. जे. कालेजक समक्ष

नवीन प्रकाशन
9-B, सिकदर पाड़ा स्ट्रीट, कलकत्ता-7
फोन : 238-4201